जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत
कोटा

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

कोटा, मंगलवार 25 मार्च, 2025

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

राजस्थान दिवस साप्ताहिक महोत्सव

राज्य स्तरीय महिला सम्मेलन

मुख्य अतिथि
श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

25 मार्च, 2025 | आदर्श स्टेडियम, बाड़मेर | दोपहर 3:00 बजे

राशि हस्तांतरण / वितरण

- 1.10 करोड़ परिवारों को 200 करोड़ रुपए की एल.पी.जी. सब्सिडी
- 31,790 बालिकाओं को गार्गी पुरस्कार, बालिका प्रोत्साहन एवं मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजनाओं में 13.16 करोड़ रुपए
- 18,300 महिला समूहों को 100 करोड़ रुपए का हस्तांतरण
- 30,000 बालिकाओं को लाडो प्रोत्साहन योजना में 7.5 करोड़ रुपए
- 5,000 मेधावी छात्राओं को कालीबाई भील योजना में स्कूटी वितरण
- 5,000 महिलाओं को इंडक्शन कुक टॉप का वितरण
- स्वामी विवेकानंद स्कॉलरशिप फॉर एकेडमिक एक्सीलेंस योजना के तहत स्वीकृतियाँ

योजनाओं के दिशा निर्देश

- बर्तन बैंक योजना
- महिला महाविद्यालयों में पुस्तकालय / रीडिंग रूम के उपयोग के सम्बंध में
- अति कुपोषित बच्चों के लिए टेक होम राशन योजना में दूध की मात्रा 15 ग्राम से 25 ग्राम
- सोलर दीदी

समर्थ महिला - समृद्ध राजस्थान

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

विचार बिन्दु

असत्य फूस के ढेर की तरह है। सत्य की एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है। –हरिभाऊ उपाध्याय

मांझी जो नाव डुबोए, उसे कौन बचाए?

जब से दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश यशवंत वर्मा के घर पर आग बुझाने के लिए गई फायर ब्रिगेड को नोटों की जली हुई गड्डियां मिलने की खबर सामने आई है, तब से पूरे देश में यह चर्चा का विषय बना हुआ है। वैसे तो, न्यायपालिका में भ्रष्टाचार की खबरें यदा कदा आती रही हैं, किंतु इस प्रकार से उच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश के घर से इतनी बड़ी संख्या में नकदी, जिसकी कीमत करोड़ों में बताई जा रही है, पहली बार मिली है। यदि न्यायाधीश के घर में आग नहीं लगी होती तो इस प्रकार का कोई प्रकरण सामने आने का प्रश्न ही नहीं था। अन्य लोक सेवकों के विरुद्ध, जिस प्रकार भ्रष्टाचार निरोधक विभाग अथवा सीबीआई रेड कर सकती है, वैसा वह किसी उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के यहां नहीं कर सकती, क्योंकि इसके लिए उन्हें संबंधित मुख्य न्यायाधीश की अनुमति की आवश्यकता होती है।

लोग खुल कर न्यायाधीशों के भ्रष्टाचार की बात इसलिए भी करने से डरते हैं, क्योंकि अवमानना का भय रहता है।

आश्चर्य की बात यह है कि घटना 14 मार्च 2025 की है और पांच दिन तक इसके बारे में न सुप्रीम कोर्ट ने कोई जानकारी दी न ही सरकार ने इस बारे में मीडिया को कुछ बताया। पहली बार इसकी जानकारी मीडिया के माध्यम से 20 अप्रैल को प्राप्त हुई, जब प्रमुख समाचार पत्र 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के वरिष्ठ संवाददाता धनंजय महापात्र की विस्तृत रिपोर्ट मुख पृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित हुई। रिपोर्ट में बताया गया कि जस्टिस वर्मा के घर में आग लगने पर जब फायर ब्रिगेड वहां पहुंची तो बड़ी संख्या में जले हुए नोट प्राप्त हुए। यह समझने से परे है कि इस बारे में पुलिस विभाग या फायर ब्रिगेड के किसी अधिकारी ने कोई औपचारिक बयान क्यों नहीं जारी किया? सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मीडिया को वस्तुस्थिति की कोई जानकारी न देने के कारण पूरे दिन अफवाहों का बाजार गर्म रहा। किसी ने प्राप्त नोटों की कीमत 15 करोड़ बताई तो किसी ने 50 करोड़ रुपए। सोशल मीडिया के विभिन्न चैनलों पर इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा आयोजित की गई।

पहली खबर यह आई कि सर्वोच्च न्यायालय के कॉलेजियम ने न्यायाधीश वर्मा का स्थानांतरण दिल्ली से इलाहाबाद उच्च न्यायालय में कर दिया। यह उल्लेखनीय है कि न्यायाधीश वर्मा का स्थानांतरण इलाहाबाद उच्च न्यायालय से दिल्ली उच्च न्यायालय में 2021 में किया गया था। सर्वोच्च न्यायालय के इस आदेश की मीडिया में आलोचना होने पर, इस आदेश को वेबसाइट से हटा लिया गया और कहा गया कि स्थानांतरण का इस घटना से कोई संबंध नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय को एक तथ्यात्मक रिपोर्ट दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने भेजी जिसमें जलते हुए नोटों की वीडियो रिकॉर्डिंग तथा जस्टिस वर्मा का स्पष्टीकरण भी शामिल था।

इलाहाबाद न्यायालय के बार एसोसिएशन ने यह प्रस्ताव भी पारित कर दिया कि वह न्यायाधीश वर्मा को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में शपथ ठाहण नहीं करने देंगे क्योंकि इलाहाबाद उच्च न्यायालय कोई 'डस्ट बिन' नहीं है। इसी बीच फायर ब्रिगेड के मुख्य फायर अधिकारी ने तो यहां तक कह दिया था कि आग बुझाने वाली टीम को किसी प्रकार के नोटों की गड्डियां प्राप्त नहीं हुईं।

जब सभी ओर से सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समुचित कार्यवाही न करने की आलोचना होने लगी तो फिर सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने एक जांच समिति गठित की, जिसका सदस्य हिमाचल प्रदेश के मुख्य न्यायाधीश, पंजाब-हरियाणा के मुख्य न्यायाधीश और कर्नाटक के मुख्य न्यायाधीश को बनाया गया। अच्छा होता यदि इस समिति में न्यायाधीशों के अतिरिक्त समाज के निष्पक्ष और प्रबुद्ध व्यक्तियों को भी सम्मिलित किया जाता।

सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने यह आदेश पारित किया कि जस्टिस वर्मा किसी प्रकार का कोई न्यायिक कार्य नहीं करेंगे जब तक कि उनके विरुद्ध जांच पूरी नहीं हो जाए। जस्टिस वर्मा के तथाकथित भ्रष्टाचार का यह प्रकरण सबकी आंखें खोल देने के लिए पर्याप्त है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 124 और 218 में क्रमशः सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीशों को हटाने की प्रक्रिया दी गई है। सर्वोच्च न्यायालय की आंतरिक जांच समिति द्वारा आरोप सिद्ध होने पर उसे सरकार के पास भेजा जाता है। यदि संसद उसे दो तिहाई बहुमत से पारित कर दे तो फिर राष्ट्रपति को संबंधित न्यायाधीश को हटाने की सिफारिश की जाती है। अंत में राष्ट्रपति, हटाने के आदेश जारी करते हैं। उल्लेखनीय है कि आज तक किसी न्यायाधीश को हटाया नहीं गया है। संसद में प्रकरण गए अवश्य, किंतु महाभियोग का प्रस्ताव पारित होने से पूर्व ही संबंधित न्यायाधीशों ने त्याग पत्र दे दिया।

न्यायाधीशों को मिली इसी सुरक्षा के कारण भ्रष्टाचार के आरोप होने के बावजूद भी उनके विरुद्ध कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं हो सकती है।

> **यह सारा प्रकरण न्यायपालिका का दोहरा चरित्र भी दिखाता है। एक ओर, जहां राजनीतिज्ञों ,प्रशासनिक अधिकारियों एवं अन्य लोक सेवकों पर भ्रष्टाचार के आरोप होने पर कड़ी कार्रवाई की बात कहते हुए उन्हें जमानत तक नहीं मिलती है, वहीं, अपने स्वयं के किसी सदस्य पर इस प्रकार का आरोप लगने पर वह उसे बचाने में पूरी तरह जुट जाती है।**

यह सारा प्रकरण न्यायपालिका का दोहरा चरित्र भी दिखाता है। एक ओर, जहां राजनीतिज्ञों ,प्रशासनिक अधिकारियों एवं अन्य लोक सेवकों पर भ्रष्टाचार के आरोप होने पर कड़ी कार्रवाई की बात कहते हुए उन्हें जमानत तक नहीं मिलती है, वहीं, अपने स्वयं के किसी सदस्य पर इस प्रकार का आरोप लगने पर वह उसे बचाने में पूरी तरह जुट जाती है। मीडिया में प्रकाशित समाचारों के अनुसार जस्टिस वर्मा का यह कहना है कि यह राशि उनकी नहीं है एवं उनका इससे कोई लेना देना नहीं है। यह उल्लेखनीय है कि यह राशि न्यायाधीश वर्मा के आवासीय परिसर में ही स्थित एक स्टोर रूम में रखी थी। यह सामान्य विवेक से परे है कि किसी न्यायाधीश के घर में इतनी संख्या में नोट पड़े हो और उसका कोई ज्ञान उनको को न हो। क्या इसी प्रकार की बात कोई अधिकारी कहता तो क्या न्यायालय उसे सही मान लेता ?

गत कुछ दिनों में न्यायाधीशों द्वारा दिए गए समाज विरोधी एवं अजीबोगरीब निर्णय भी चर्चा का विषय रहे हैं। हाल ही में इलाहाबाद न्यायालय के जस्टिस मिश्र द्वारा यह निर्णय दिया गया कि किसी नाबालिग बालिका के निजी अंगों पर हाथ फेरना ,उसके पजामे का नाडा खोलना और उसे घसीट करके किसी पुलिया के नीचे ले जाना, बलात्कार के प्रयास की परिभाषा में नहीं आता है। इसी आधार पर जिला न्यायालय द्वारा दी गई 7 वर्ष की सजा को निरस्त करते हुए अभियुक्त को बरी कर दिया गया। महिलाओं के प्रति इतनी घटिया मानसिकता वाले जज का उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के पद पर बने रहना क्या उचित कहा जा सकता है? किंतु उन्हें हटाना महाभियोग के माध्यम से ही संभव है जो लगभग असंभव है। उच्च न्यायालय का कोई न्यायाधीश किसी नाबालिग बालिका के प्रति अपराध संबंध में यह विचार रखे, फिर भी वह न्यायाधीश बने रहें, इससे बड़ा दुर्भाग्य देश का क्या हो सकता है?

इसी प्रकार एक न्यायाधीश शेखर यादव ने विश्व हिंदू परिषद की बैठक में यहां तक कहा कि देश में बहुमत का निर्णय चलेगा और उसी का निर्णय सबको मानना होगा। यह एक साम्प्रदायिक बयान था। न्यायाधीश के इस वक्तव्य को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने भी सही और उचित सिद्ध करने का प्रयास किया। सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष न्यायाधीश शेखर यादव को नोटिस भेज कर बुलाया गया एवं उनका स्पष्टीकरण लिया गया किंतु उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ और वे अपनी बात को सही ठहराते रहे। अभी भी न्यायाधीश यादव अपने न्यायालय में यथावत काम कर रहे हैं।

कभी-कभी लगता है कि संविधान में न्यायाधीशों को जिस प्रकार की सुरक्षा प्राप्त है, उसके कारण उन्होंने स्वयं को कानून से ऊपर समझना प्रारंभ कर दिया है। न्यायाधीशों के स्तर हीन निर्णयों के बारे में सर्वोच्च न्यायालय ने भी चिंता व्यक्त की है। इन सबके बावजूद यदि ऐसे न्यायाधीश बने रहते हैं, जिन्हें लोगों के भाग्य का निर्णय करने का अधिकार होता है, तो यह न्यायपालिका के पतन की पराकाष्ठा ही कहा जाएगा।

हाल ही में, जब उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोप लगने पर भारत के लोकपाल ने संज्ञान लेकर जांच प्रारंभ की, तो उस पर सर्वोच्च न्यायालय ने यह कह कर रोक लगा दी कि लोकपाल के दायरे में न्यायाधीश नहीं आते हैं। स्वयं के बारे में इस प्रकार का निर्णय लेना क्या स्वयं को एक प्रकार से खुदा समझना नहीं है ?

कोई भी संस्था जवाबदेही के अभाव में निरंकुश हो जाती है। कुछ इसी प्रकार की प्रवृत्ति आजकल न्यायपालिका में दिखाई दे रही है। एक ओर जहां कार्यपालिका और विधायिका द्वारा गलत कार्य करने पर न्यायपालिका अंकुश लगाती है, वही न्यायपालिका ही स्वयं संविधान विरोधी काम करने लगे या भ्रष्ट हो जाए तो फिर उसकी जवाबदेही कैसे तय की जाएगी? इसी प्रकार की स्थिति पर ये पंक्तियां सटीक बैठती हैं "मांझी जब नाव डुबोए तो उसे कौन बचाए?"

जब न्यायपालिका को जवाबदेह बनाने के लिए राष्ट्रीय न्यायिक जवाबदेही कानून बनाया गया, तो उसे सर्वोच्च न्यायालय ने असंवैधानिक मानते हुए निरस्त कर दिया। जस्टिस वर्मा प्रकरण ने इस चर्चा को पुनः जीवित किया है कि एन जे ए सी National Judicial Appointment and Accountability Commission) बनाया जाय।

संविधान निर्माताओं ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि ऐसे व्यक्ति न्यायाधीश के रूप में नियुक्त हो जाएंगे जो संविधान की भावना के विपरीत फैसला देंगे एवं समाज में विघटन का कार्य करेंगे। जब भ्रष्टाचार के आधार पर, पैसे लेकर न्याय होने लगेगा, तो उसे 'बिकने वाला न्याय' ही कहा जाएगा।

प्रसिद्ध वकील प्रशांत भूषण ने तो एक बार यहां तक कहा था कि सर्वोच्च न्यायालय के आठ न्यायाधीश भ्रष्ट हैं और उन्होंने उसकी सूची भी सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को सौंपी थी। इस बार मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने ऐतिहासिक कदम उठाते हुए जस्टिस वर्मा से संबंधित सारे रिकॉर्ड, वीडियो रिकॉर्डिंग और अन्य कार्रवाई को सार्वजनिक करने का काम किया है।

यह एक स्वागत योग्य कदम है और न्यायपालिका के कामकाज को अधिक पारदर्शी बनाएगा। मुख्य न्यायाधीश द्वारा गठित समिति शीघ्र ही अपनी रिपोर्ट देगी जिसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

इस बात का भी समय आ गया है जब न्यायाधीशों को प्रदत्त पूर्ण संवैधानिक सुरक्षा पर भी पुनः विचार किया जाय। अच्छा होगा यदि इसकी पहल न्यायपालिका द्वारा ही की जाय।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

राजस्थान दिवस का उत्सवी आग़ाज़

बाल मुकुन्द ओझा

राज्य की भजनलाल सरकार ने हिन्दू नववर्ष (वर्ष प्रतिपदा) पर राजस्थान स्थापना दिवस मनाने का उत्सवी आगाज किया है। राज्य सरकार जनभागीदारी के साथ राजस्थान दिवस मनाने जा रही है। प्रदेशभर में राजधानी से लेकर पंचायत मुख्यालय तक 25 मार्च से 31 मार्च तक विविध कार्यक्रमों के माध्यम से प्रदेश के गरीब, युवा, महिला और किसानों को विशेष सौगातें दी जाएगी।

इसके साथ ही निवेश उत्सव, सुशासन समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। राजस्थान दिवस समारोह का आगाज 25 मार्च को मरूधरा बाड़मेर से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की उपस्थिति में आयोजित मातृवन्दन को समर्पित 'महिला सम्मेलन' से होगा। वहीं 26 मार्च को 'किसान सम्मेलन एवं एफ.पी.ओ. कार्यक्रम' के मुख्य समारोह का आयोजन बीकानेर में तथा 27 मार्च को 'गरीब एवं अन्त्योदय' का मुख्य कार्यक्रम भरतपुर में आयोजित किया जाएगा। इसी तरह 28 मार्च को 'सुशासन समारोह' का आयोजन भीलवाड़ा में एवं 29 मार्च को 'युवा एवं रोजगार उत्सव' का आयोजन कोटा में होगा। राज्य स्तरीय 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' 30 मार्च (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) को एवं राज्य स्तरीय 'निवेश उत्सव' 31 मार्च को जयपुर में आयोजित किया जाएगा।

नववर्ष समारोह समिति के प्रवक्ता महेन्द्र सिंहल ने कहा कि राजस्थान का गठन मुहूर्त के अनुसार वर्ष प्रतिपदा को हुआ था, जो संयोगवश 30 मार्च को पड़ा। लंबे समय से वर्ष प्रतिपदा को राजस्थान दिवस के रूप में मान्यता देने की मांग की जा रही थी, जो अब पूरी हुई है। उन्होंने आव्हान किया कि अब सभी मिलकर वर्ष प्रतिपदा को राजस्थान दिवस के रूप में मनाने का संकल्प लें। अब तक 30 मार्च को मनाए जाने वाला राजस्थान दिवस सरकारी कार्यक्रम बनकर रह गया था, अब यह समाज का उत्सव बनेगा।

नववर्ष समारोह समिति का कहना है भारतीय कालगणना और संवत्सर खगोलीय सिद्धांतों पर आधारित हैं, किसी विचार या पंथ पर नहीं। ऐसे में विदेशी प्रणाली का अंधानुकरण हमारी बौद्धिक गुलामी का प्रतीक है। जैसे होली और दीपावली तिथि के अनुसार मनाए जाते हैं, वैसे ही राजस्थान दिवस को भी तिथि के आधार पर मनाना चाहिए। सरदार पटेल सहित किसी भी नेता ने 30 मार्च को राजस्थान दिवस के रूप में चिह्नित नहीं किया था। अंग्रेजों के जाने के बावजूद उनकी व्यवस्थाएं हम पर हावी रहीं, जिससे वास्तविक राजस्थान दिवस को भुला दिया गया। अब वर्ष प्रतिपदा को उसका उचित स्थान मिलने से गौरवशाली परंपरा को पुनर्स्थापित किया जा सकेगा।

राजस्थान अपनी आन, बान, शान, शौर्य, साहस, कुर्बानी, त्याग, बलिदान तथा वीरता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यात है। स्थापना दिवस पर हमें अपने वर्तमान के साथ सुनहरे अतीत को याद करने की महत्ती जरुरत हैं। किसी ने सही कहा है, वर्तमान अतीत की कुंजी है। आज हमारे प्रतीकों पर हमले हो रहे है। हमारे महापुरुषों के सम्बन्ध में भ्रांतियां फैलाई जा रही है। जिनका मुंहतोड़ जवाब देना जरुरी हो गया है। विदेशी आक्रांता हमारे आइकॉन नहीं हो सकते। इस दृष्टि से भी जनता को जागरूक करना आवश्यक हो गया है।

भौगोलिक विषमताओं और प्राकृतिक चुनौतियों के बावजूद यहां के नागरिकों की दृढ़ इच्छा शक्ति और आपसी सहयोग से प्रदेश का चहुंमुखी विकास हो सका है। राजस्थान में गरीब लोगों के सामाजिक, आर्थिक स्थिति में सुधार, संसाधनों में वृद्धि और राजनीति, व्यवसाय आदि सभी क्षेत्रों में विकास, हमारी खुशहाली के प्रतीक हैं। राजपूताना कहे जाने वाले राजस्थान का इतिहास गौरवशाली रहा है जिस पर हर प्रदेशवासी को गर्व है। मातृ भूमि की रक्षा एवं परम्पराओं तथा संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने में यहां के लोगों ने सदैव पहल की है। राजस्थान की कला, साहित्य और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि विश्व में अपनी अलग पहचान रखती है। राजस्थान इस वर्ष अपना 76वां स्थापना दिवस मना रहा है। कला-संस्कृति, पर्यटन व्यापार, खेल और खेती सभी क्षेत्रों में सबसे आगे हैं राजस्थानी।

राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। राजस्थान रेतीला, बंजर, पर्वतीय और उपजाऊ कच्छारी मिट्टी से मिलकर बना है। राज्य की अर्थ व्यवस्था कृषि एवं ग्रामीण आधारित है। कृषि और पशु पालन यहां के निवासियों के मुख्य रोजगार है। आजादी के बाद इस प्रदेश ने निश्चय ही प्रगति और विकास की ऊंचाईयों को छुआ है। वर्षा की अनियमितता के कारण यह प्रदेश अनेकों बार सूखे और अकाल का शिकार हुआ। मगर प्रदेशवासियों ने विपरीत स्थितियो में भी जीना सीखा और अपने बुलन्द हौसले को बनाये रखा। यह सही है कि हमने हर क्षेत्र में प्रगति हासिल की है। स्कूलों की संख्या बढ़ी है। छात्रों का नामांकन भी दुगुना-चौगुना हुआ है। गांव-गांव और घर-घर बिजली की रोशनी प्रज्जवलित हुई है। सड़कों का जाल भी चहुंओर देखने को मिल रहा है। गांवों को मुख्य सड़कों से जोड़ा गया है। पेयजल के क्षेत्र में अच्छी-खासी प्रगति हुई है। गांव-गांव और शहर-शहर में पानी पहुंचाया गया है। स्वास्थ्य के क्षेत्रों में बड़ी कामयाबी हासिल की गई है।

गांव-गांव में स्वास्थ्य सुविधाओं को पहुंचाया गया है। मैट्रो सिटी में बड़े अस्पताल बनाये गये हैं और जटिल से जटिल रोगों का ईलाज किया जा रहा है। औद्योगिक विकास की दृष्टि से भी हम आगे बढ़े हैं। रेगिस्तानी क्षेत्र राजस्थान में पहले लोग उद्योग-धंधे स्थापित करने से डरते थे। आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होने और लालफीताशाही के कारण उद्योगपति राजस्थान आने से डरते थे। यहाँ तक कि प्रवासी उद्योगपति भी अपने क्षेत्र में उद्योग स्थापित करने में हिचकिचाते थे। मगर आज आधारभूत सुविधाएँ सुलभ होने के कारण राजस्थान में बड़ी तेजी से बड़े और वृहद् उद्योग स्थापित हुए हैं। औद्योगिक विकास के क्षेत्र में राजस्थान का काया कल्प हुआ हे। हमारे लाखों नौजवानों को रोजगार मिला है। राजस्थान पर्यटन के क्षेत्र में काफी समृद्धशाली राज्य है। यहाँ के किले, हवेलियाँ, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर मेले, महल, झीलें, पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर रही है। राजस्थान का पर्यटन के क्षेत्र में विश्व में प्रमुख स्थान है। पर्यटन राज्य के रूप में प्रदेश ने विश्व मानचित्र में अपनी अनूठी पहचान बनाई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी ऐतिहासिक और समृद्ध विरासतों को संरक्षित कर उन्हें रोजगार से जोड़े ताकि वर्तमान अतीत की कुंजी है की भावना सार्थक हो।

इसके साथ ही राजस्थान में हुई प्रगति को अनदेखा करना अनुचित होगा। मगर प्रगति के साथ साथ लाल फीताशाही, भ्रष्टाचार और कुशासन के क्षेत्र में भी हम पीछे नहीं रहे। राजस्थान की प्रगति को भ्रष्टाचार और अकर्मण्यता ने लील लिया। विशेषकर पिछली सरकार के कार्यकाल के दौरान सरकारी सेवाओं में भर्ती और विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में भ्रष्टाचार की अनगिनत शिकायतों से प्रदेश जूझ रहा है। राजस्थान दिवस के अवसर पर हमें प्रगति के साथ-साथ प्रगति के अवरोधों पर भी गंभीरता से चिन्तन और मनन करना चाहिये।

–बालमुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

जिला कलेक्टर और एसपी ने कैलादेवी मेले की व्यवस्थाएं जांची

बिजली, पानी, सड़क, शौचालय आदि का जायजा लेते हुए भंडारा संचालकों को निर्देश दिए

करौली, (निसं)। उत्तर भारत के प्रमुख शक्तिपीठ तीर्थ स्थल आस्था धाम कैलादेवी में 26 मार्च से शुरू होने वाले मेले को देखते हुए जिला कलेक्टर गंभीर और सजग नजर आ रहे हैं, जिन्होंने पुलिस अधीक्षक के साथ संबंधित विभागों के अधिकारियों को साथ लेकर गंगापुर मोड़ से कैलादेवी मंदिर तक पैदल ही सड़क पर चलकर बिजली, पानी, सड़क, शौचालय आदि का जायजा लेते हुए भंडारा संचालकों को निर्देश दिए।

कैलादेवी का मेला 26 मार्च से शुरू होने जा रहा है जिसके चलते पद यात्रियों के आने का सिलसिला शुरू हो चुका है। आने वाले पदयात्री एवं दर्शनार्थियों कि सुविधा में किसी तरह की कमी नहीं रहे की भावना को देखते हुए जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना गंभीर और सजग नजर आ रहे हैं।

▪ कैलादेवी का मेला 26 मार्च से शुरू होगा, यात्रियों के आने का सिलसिला शुरू हो चुका है

उन्होंने बीते एक माह में कई बार जिला स्तरीय अधिकारिओ के साथ बैठक कर एवं निरीक्षणों के माध्यम से व्यवस्थाओं को समय पर दुरुस्त करने के निर्देश दिए थे। अब मेला शुभारंभ होने में मात्र एक दिन शेष रह गया है जिस पर गंभीर हुए जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना अपने साथ जिला पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय के अलावा विद्युत, पेयजल, सार्वजनिक निर्माण विभाग, पंचायत राज विभाग, पंचायत समिति के विकास अधिकारी, उप जिला कलेक्टर, तहसीलदार सहित संबंधित विभागों के अधिकारियों को साथ लेकर सोमवार को गंगापुर मोड पर पहुंचे, जहां से उन्होंने अपने वाहनों को छोड़ दिया और सड़क पर चल रहे पद यात्रियों के साथ-साथ पैदल चलने लग गए, जिन्हें देखने के लिए ग्रामीण सड़कों पर आ गए।

इस दौरान जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना ने जगह-जगह लगाए जा रहे निःशुल्क भोजन भंडारो में पहुंचकर भंडारा संचालकों को साफ सफाई का विशेष ध्यान रखने एवं सड़क से दूरी बनाकर भंडारा लगाने के निर्देश दिए। वहीं उन्होंने रास्ते में पड़ने वाली ग्राम पंचायत में पदयात्रियों कि सुविधा के लिए बनाए गए स्थाई शौचालयों का निरीक्षण करते हुए पेयजल के लिए लगे जल मंदिरों की जांच पड़ताल की एवं सड़क किनारे बनाए गए फुटपाथ का निरीक्षण करते हुए सड़कों में हो रहे गड्डों को तुरंत भरने के अलावा रात्रि के समय प्रकाश व्यवस्था सुदृढ़ करने के निर्देश दिए।

इस दौरान पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय, उपखण्ड अधिकारी एवं मेला मजिस्ट्रेट प्रेमराज मीणा, विकास अधिकारी, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के सहायक निदेशक धर्मेंद्र कुमार मीणा, सानिवि के अधिशाषी अभियन्ता चन्द्रप्रकाश गुर्जर सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद थे।

जोधपुर-गांधीधाम एक्सप्रेस ट्रेन प्रतिदिन होने पर लोगों ने खुशी जताई

जालोर, (कासं)। जिला मुख्यालय पर रविवार को रात्रि में जोधपुर-गांधीधाम एक्सप्रेस प्रतिदिन होने के कारण प्रथम बार जालोर रेलवे स्टेशन पर पहुंचने पर स्वागत किया गया। इस अवसर पर रात्रि को शहर के सैकड़ों लोगों ने जालोर रेल यात्री सेवा व विकास समिति के जिला अध्यक्ष हीराचन्द भण्डारी के साथ मिलकर ट्रेन के लोको पायलट (ड्राईवर) का फूल माला व साफा पहनाकर स्वागत किया।

इस अवसर पर जागरुक कार्यकर्ता ममता माली ने जोधपुर गांधीधाम सुपरफास्ट ट्रेन की पूजा-अर्चना की। लोको पायलट को हीराचन्द भण्डारी ने साफा पहनाया व माला बाबूलाल राव, लोकेश बोहरा, दिनेश कुमार बारोट, चंदन नागर, नैनसिंह माली, मुकेश अग्रवाल, राजूभाई माली, नटवर अग्रवाल, होसाराम माली, नरेश सिंधी इत्यादि ने पहनाया। इस ट्रेन के चालू करने पर मण्डल रेल प्रबन्धक पंकज कुमार सिंह सीनियर डी सी एम विकास खेडा सहित रेलवे प्रशासन का आभार जताया। इस अवसर पर यात्रियों को इस ट्रेन के प्रतिदिन नियमित रूप से संचालित किये जाने पर खुशी जाहिर करते हुए यात्रियों व संघर्ष समिति के कार्यकर्ताओं ने बताया कि इस ट्रेन को जयपुर या दिल्ली तक प्रतिदिन संचालित किया जाना चाहिए, ताकि यात्रियों को आवागमन में सुविधा होगी। इसी तरह समदडी भीलडी खण्ड के यात्रियों ने पहली बार नियमित रूप से गांधीधाम सुपरफास्ट ट्रेन पहुंचने पर खुशी का इजाहर किया।

लोगों ने जालोर रेल यात्री सेवा व विकास समिति के साथ मिलकर ट्रेन के लोको पायलट (ड्राईवर) का स्वागत किया।

गंगनहर प्रणाली में एक से नहरबंदी रहेगी

श्रीगंगानगर, (निसं)। गंगनहर प्रणाली में 1 अप्रैल से 20 अप्रैल तक नहरबंदी रहेगी।

इस परिपेक्ष्य में गंगनहर प्रणाली की नहरों में नहरबंदी से पूर्व उपलब्ध पानी से पेयजल भण्डारण सुनिश्चित करने हेतु 25 मार्च से आगामी आदेशों तक बाराबंदी स्थगित की जाती है। जल संसाधन के अधीक्षण अभियंता धीरज चावला ने बताया कि वर्तमान में जो नहरें वरीयता अनुसार रेग्युलेशन में हैं, उनमें प्राथमिकता पेयजल की रहेगी तथा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग को पेयजल हेतु बरमा लगाने की अनुमति दी जाती है। यदि किसी काश्तकार द्वारा विरोध किया जाता है, तो उसके विरूद्ध कार्यवाही अमल में लायी जायेगी। इन नहरों को पानी की उपलब्धता अनुसार कभी भी बंद किया जा सकता है तथा बंद होने के साथ ही इन नहरों की बाराबंदी भी स्वतः स्थगित हो जायेगी।

राशिफल मंगलवार 25 मार्च, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, श्रवण नक्षत्र रात्रि 3:49 तक, शिव योग दिन 2:53 तक, बव करण सायं 4:26 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग रात्रि 3:46 तक है। आज शुक्र उदय पूर्व में रात्रि 9:15 पर होगा। आज पाप मोचनी एकादशी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:31 से 11:02 तक, लाभ-अमृत 11:02 से 2:04 तक, शुभ 3:35 से 5:06 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:29, सूर्यास्त 6:37

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि हो सकती है।

कर्क
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यवसायिक संबंध बनेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

कन्या
व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों-परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों-परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 50 संख्याः 159 प्रभात कोटा, मंगलवार 25 मार्च, 2025 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

ग्रीनलैण्ड को अमेरिका का 51 वां प्रान्त बनाने की ट्रम्प की इच्छा से काफी विचलित हैं, वहां के नागरिक

85 प्रतिशत ग्रीनलैण्ड निवासी, ट्रम्प की इस कल्पना के पूर्णतया खिलाफ हैं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मार्च। डॉनल्ड ट्रंप ने खनिजों से भरपूर ग्रीनलैंड को खरीदने की बात कही थी, और धमकी दी थी कि यदि ऐसा नहीं हो पाया तो उनके नेतृत्व में अमेरिका ''वैसे भी'' ग्रीनलैंड को हासिल कर ही लेगा।

अब अमेरिका ने ''हाई प्रोफाइल'' मेहमान वहाँ भेजने शुरु कर दिए हैं। द्वीप के राजनीतिक अधिकारियों ने इसे ''अत्यधिक आक्रामक'' कदम बताया है।

यू.एस. नैशनल सिक्यूरिटी एडवाइज़र माइक वॉल्ट्ज़ के ग्रीनलैंड जाने की पूरी तैयारी है। इसी के साथ, अमेरिका के वाइस प्रैसिडेंट की पत्नी ऊषा वैंस भी अपने पुत्र के साथ ''सांस्कृतिक मिशन'' पर द्वीप की यात्रा पर जाएंगी। वाइट हाउस प्रवक्ता के अनुसार, ऊषा वैंस द्वीप के विभिन्न सांस्कृतिक स्थलों का दौरा करेंगी तथा उसके बाद वार्षिक ''डॉग स्लैड रेस'' भी देखेंगी।

- **जैसा की विदित ही है, 1953 के बाद ग्रीनलैण्ड, स्वायत्त शासित हिस्सा बना रहा डैनमार्क का।**
- **पर हाल ही में हुए चुनाव में, ग्रीनलैण्ड ने एक नये प्रधानमंत्री को जिता कर भेजा। चुनाव इस बात का भी प्रतीक था कि ग्रीनलैण्डवासी एक स्वतंत्र व सर्वभौम राष्ट्र बनाना चाहते हैं।**
- **अमेरिका के प्रवक्ता के अनुसार, ग्रीनलैण्ड का अधिग्रहण करने के बाद, अमेरिका अच्छी हुकूमत देगा, तथा ग्रीनलैण्ड की समृद्ध खनिज सम्पदा को भी अन्य देशों की ललचायी आंखों से सुरक्षित रखेगा।**
- **अमेरिका का प्रस्ताव अस्वीकार होने के बाद, अमेरिका ने एक के बाद एक वी.वी.आई.पी. अतिथि ग्रीनलैण्ड भेजने शुरू किए हैं।**
- **इसी सन्दर्भ में पहले राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, माइक वॉल्ट्ज और उपराष्ट्रपति की पत्नी ऊषा वैंस को ग्रीनलैण्ड भेजा गया। आक्रमक कलचरल पर्यटन को भी ग्रीनलैण्ड वासी सन्देह की दृष्टि से देख रहे हैं।**

तथापि, द्वीपवासी ग्रीनलैंड की संस्कृति में अमेरिका की इस अत्यधिक रुचि को बहुत सहजता से नहीं ले रहे हैं। आम स्तर पर 85 प्रतिशत ग्रीनलैंड वासी, अमेरिका का हिस्सा बनने की किसी भी संभावना के विरुद्ध हैं।

द्वीप के प्रधानमंत्री ने अमेरिका के इस कदम को ''अत्यधिक आक्रामक'' बताया है। नव-निर्वाचित प्रधानमंत्री ने कहा है कि अमेरिका का यह कदम दर्शाता है कि उसके मन में द्वीप के लिए ''आदर का अभाव'' है।

ये राजनीतिक यात्राएं अचानक ही ऐसे समय पर शुरु हुई हैं, जब द्वीप राजनीतिक पलायन के दौर से गुज़र रहा है। सन् 1953 तक, ग्रीनलैंड पर डैनमार्क का शासन था और उसके बाद से यह द्वीप डैनमार्क का स्वायत्त हिस्सा रहा है। तथापि, हाल में चुनाव हुए हैं, जिनके द्वारा एक नया प्रधानमंत्री चुना गया।

द्वीप के लोग स्वतंत्र तथा एक संप्रभु राष्ट्र के रुप में रहना चाहते हैं। इन लोगों को अमेरिका की बातों से भारी धक्का लगा है।

द्वीप में ऐसे दुर्लभ खनिज तत्वों का भंडार हैं जिनकी वैश्विक स्तर पर आपूर्ति कम है और इसलिए कई देशों की इस पर नज़रें हैं। ये दुर्लभ खनिज रक्षा उद्योगों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

45 पुराने कानून खत्म

जयपुर, 24 मार्च। राजस्थान विधानसभा के सत्र के आखिरी दिन प्रदेश में 45 गैर-जरूरी और पुराने हो चुके कानून खत्म कर दिये गये। विधानसभा में बहस के बाद राजस्थान विधियां निरसन विधेयक पारित कर दिया गया है। इस बिल में पुराने 45 कानून खत्म करने का प्रावधान है। इनमें 37 कानून तो पंचायती राज से जुड़े हैं।

बीकानेर स्टेट डिस्ट्रिक्ट बोर्ड अमेंडमेंट एक्ट 1952, बीकानेर म्यूनिसिपल अमेंडमेंट एक्ट 1952 जैसे पुराने कानून समाप्त हो गए। बिल पर हुई चर्चा का जवाब देते हुए संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि

- **राजस्थान विधानसभा में बजट सत्र के अंतिम दिन 45 गैर जरुरी तथा पुराने पड़ चुके कानून रद्द करने का बिल पारित कर दिया गया।**

समय-समय पर अप्रचलित और अनुपयोगी कानून को हटाया जाता रहा है। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार में भी 123 कानून निरस्त किए गए थे। इनमें 100 अमेंडमेन्ट थे। मंत्री पटेल ने कहा कि वर्तमान में 45 कानूनों के निरसन की अनुशंसा की गई है। इनमें 37 कानून मूल कानून में ही समाहित हो गए हैं। पटेल ने कहा कि लीगल सिस्टम के जरिए जनता को फायदा पहुंचाना सरकार की पहली प्राथमिकता है। समय -समय पर सरकार की ओर से कानून की समीक्षा की जाती है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अब सांसदों का वेतन एक लाख रूपये प्रतिमाह से बढ़कर सवा लाख रूपये प्रतिमाह हुआ

कर्नाटक की कांग्रेस सरकार भी पीछे नहीं रही, मंत्री व विधायकों को वेतन वृद्धि देने के मसले पर

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मार्च। खुद को फायदा पहुँचाने की कोशिश के तहत, आज मोदी सरकार ने सरकारी खजाने के दरवाजे खोलते हुये, वर्तमान सांसदों के वेतन में 24 प्रतिशत बढ़ोतरी कर दी। सरकार ने वर्तमान तथा पूर्व सांसदों के वेतन, पेन्शन तथा अतिरिक्त (एडिशनल) पेन्शन के संशोधन की भी घोषणा कर दी।

संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार, वर्तमान सांसदों के दैनिक भत्ते तथा 5 साल से अधिक समय तक सांसद रह चुके नेताओं की पेन्शन तथा अतिरिक्त पेन्शन भी बढ़ाई गई है।

जहाँ नागरिक अत्यावश्यक वस्तुओं की ऊँची कीमतों की मार झेल रहे हैं, वहीं मोदी सरकार ने सांसदों के वेतन बढ़ाने को प्राथमिकता दी है। सांसदों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद भी शामिल है। जाहिर है, सरकार के इस कदम से लोगों में नाराज़गी पैदा होगी।

- **मुख्यमंत्री का वेतन 78 हजार रू. प्रतिमाह से बढ़कर 1.5 लाख रु. हो गया। तथा मंत्रियों का वेतन भी साठ हजार रु. से बढ़कर सवा लाख रुपये प्रतिमाह हो गया।**
- **कर्नाटक में एक साधारण नागरिक के वेतन की तुलना में एक पूर्व विधायक को दोगुने से भी कुछ ज्यादा वेतन मिलेगा और वर्तमान विधायक को आम आदमी से नौ गुना ज्यादा वेतन मिलेगा।**

सांसदों का वेतन ''सैलरी, अलाउन्सैज़ एंड पेन्शन ऑफ मैम्बर्स ऑफ पॉलियामैंट एक्ट ''में प्रदत्त अधिकारों को काम में लेते हुये बढ़ाया गया है, जो इनकम टैक्स एक्ट, 1961 में उल्लिखित ''कॉस्ट इन्फ्लेशन इन्डैक्स'' पर आधारित है।

सांसदों का मासिक वेतन 1,00,000 रूपए से बढ़ाकर 1,24,000 रूपए कर दिया गया है। दैनिक भत्ता 2,000 रूपए से बढ़ाकर 2,500 रूपए कर दिया गया है। पूर्व सांसदों की पेन्शन 25,000 रूपए प्रतिमाह से बढ़ाकर 31,000 रूपए प्रतिमाह कर दी गई है और 5 वर्ष से अधिक प्रत्येक वर्ष की सेवा पर मिलने वाली अतिरिक्त पेन्शन 2,000 रूपए प्रतिमाह से बढ़ाकर 2,500 रूपए प्रतिमाह कर दी गई है।

कर्नाटक में कांग्रेस की राज्य सरकार ने भी मुख्यमंत्री, मंत्रियों तथा विधायकों को 100 प्रतिशत वेतन-वृद्धि को मंजूरी देने में कोई संकोच नहीं किया है।

ये वेतन वृद्धियाँ बजट सत्र 2025 के दूसरे चरण में दी गई। इससे चन्द रोज़ पहले ही, कर्नाटक सरकार ने अपने मुख्यमंत्री, मंत्रियों तथा विधायकों के वेतन में शत-प्रतिशत वृद्धि की मंजूरी दी थी।

''कर्नाटक मिनिस्टर्स सैलरीज एंड अलाउंसेज़ (अमैन्डमैंट) बिल'' के अनुसार, मुख्यमंत्री का वेतन दोगुना होने के बाद, 75,000 रूपए से 1.5 लाख रूपए तथा मंत्रियों का वेतन 108 प्रतिशत वृद्धि के बाद 60,000 रूपए से बढ़ाकर 1.25 लाख रूपए हो जायेगा।

कर्नाटक विधानसभा में भारी अव्यवस्था के दौरान संदर्भित विधेयक, बिना किसी बहस के पारित हो गया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वन विभाग का रेंजर व सहायक वनपाल 1.98 लाख की रिश्वत लेते गिरफ्तार

78 हजार रुपये नगद एवं एक लाख बीस हजार का चेक बतौर रिश्वत ली

कोटा/जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की कोटा स्पेशल टीम ने सोमवार को कार्रवाई करते हुए रेंज बोराव जिला चितौड़गढ़ के रेंजर राजेन्द्र चौधरी एवं नाका लोटयाना (उंडाखाल) के वनपाल सहायक राजेन्द्र कुमार मीणा को परिवादी से 78 हजार रूपये नगद व एक लाख बीस हजार का सेल्फ चैक कुल एक लाख 98 हजार रूपये रिश्वत लेते हुये रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो पुलिस महानिदेशक रवि प्रकाश मेहरडा ने बताया कि भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की कोटा स्पेशल यूनिट को परिवादी ने शिकायत दी कि उसकी स्वयं के साथी की फर्म को निविदा से अलग वन क्षेत्र में ट्रेन्च व गड्डे खुदवाने का कार्य करवाये जा रहे हैं। वर्तमान समय में जितना काम करवा चुका है, उसका वन विभाग से भौतिक सत्यापन करवाने के बाद अलग-अलग राशि के बिल पेश किये थे। इन बिलों का भौतिक सत्यापन होने के बाद भी रेंजर राजेन्द्र चौधरी व सहायक वनपाल राजेन्द्र कुमार मीणा की ओर से बिल बनाने की एवज में रिश्वत मांग की जा रही है। वहीं रेंजर राजेन्द्र चौधरी ने स्वयं के लिए 20 प्रतिशत (आवंटित निविदा राशि का) व सहायक वनपाल के लिए 2 प्रतिशत (आवंटित निविदा राशि का) रिश्वत राशि मांगी। जिस पर एसीबी कोटा स्पेशल टीम के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुकुल शर्मा के निर्देशन में शिकायत का सत्यापन करवाया गया। सत्यापन के दौरान सहायक वनपाल राजेन्द्र मीणा ने 50 हजार रुपये प्राप्त किये गये तथा वहीं सोमवार को ट्रैप की कार्यवाही करते हुये रेंजर राजेंद्र चौधरी व वनपाल राजेंद्र मीणा को 78 हजार रुपये नकद व एक लाख बीस हजार का सेल्फ चेक कुल 1 लाख 98 हजार रुपये रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया गया है।

आरोपी रेंजर राजेन्द्र चौधरी एवं वनपाल सहायक राजेन्द्र कुमार मीणा।

- बिलों का भौतिक सत्यापन होने के बाद भी रेंजर राजेन्द्र चौधरी व सहायक वनपाल राजेन्द्र कुमार मीणा की ओर से बिल बनाने की एवज में रिश्वत की मांग की जा रही थी
- रेंजर ने स्वयं के लिए 20 प्रतिशत (आवंटित निविदा राशि का) व सहायक वनपाल के लिए 2 प्रतिशत (आवंटित निविदा राशि का) रिश्वत मांगी

अवैध हथियार सहित एक गिरफ्तार

ब्यावर, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक व वृत्ताधिकारी के निकट सुपरविजन में थानाधिकारी पुलिस थाना साकेतनगर मय टीम द्वारा अवैध हथियार तस्करों के विरूद्ध कार्रवाई करते हुए एक आरोपी के कब्जे से एक अवैध देशी पिस्टल मय दो जिन्दा कारतूस जब्त कर आरोपी को गिरफ्तार किया।

जानकारी के अनुसार 23 मार्च को थानाधिकारी साकेतनगर को मुखबिर से सूचना मिली कि एक जवान उम्र का व्यक्ति जो शिवनाथपुरा चौराहा अतिथि होटल के पास खड़ा हैं जिसके पास अवैध देशी पिस्टल हैं, जिसे वो बैचने की फिराक में हैं। सूचना विश्वसनीय होने से पुलिस द्वारा त्वरीत कार्यवाही करते हुए मुखबीर द्वारा बताये गये स्थान पर पहुंचे तो बताये गये हुलिये का एक व्यक्ति खड़ा नजर आया जो पुलिस को देख कर छुपने लगा जिसको पुलिस टीम द्वारा डिटेन कर तलाशी ली तो आरोपी के कब्जे से अवैध देशी पिस्टल व जिन्दा कारतूस मिले जिनको जब्त कर आरोपी झाला की चौकी पुलिस थाना बर निवासी अजय कुमार मेवाडा पुत्र रमेशचन्द्र कलाल को गिरफ्तार कर लिया गया।

बाइक चोर गिरफ्तार, चोरी की बाइक बरामद

पाली, (नि.सं.)। पाली पुलिस ने एक बाइक चोर को गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से चोरी की बाइक बरामद की है। सिरोही जिला निवासी युवक ने पाली में आकर बाइक चोरी की वारदात की। रिमांड के दौरान पुलिस को भी और भी वारदातें खुलने की उम्मीद है।

कोतवाल अनिल कुमार ने बताया कि पाली शहर के नवलखा रोड मंदिर के पास रहने वाले धर्मेंद्र प्रजापत ने रिपोर्ट दी थी। इसमें बताया कि उसके घर के बाहर रखी बाइक 22 फरवरी को चोरी हो गई। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। एक टीम गठित की जो सीसीटीवी फुटेज खंगालते हुए सिरोही जिले के उड़ (बरलूट) निवासी 25 साल के रवि कुमार पुत्र गोपालराम को हिरासत में लिया। उसने पूछताछ में पाली से बाइक चोरी करना स्वीकार किया। इस पर उसकी निशानदेही पर पाली से चुराई गई बाइक बरामद की और उसे गिरफ्तार किया। आरोपी ने पुलिस ने बचने के लिए चोरी की गई बाइक की दोनों नंबर प्लेट तोड़ दी और बिना नंबर प्लेट के बाइक सिरोही में दौड़ा रहा था। आरोपी पाली में एक फैक्ट्री में काम करने आए अपने रिश्तेदार के यहां मिलने आया हुआ था।

OFFICE OF THE MUNICIPAL COUNCIL, CHITTORGARH

S.No./ Revenue/2024-25/9859-62 Dated :- 18.03.2025

CORRIGENDUM

नगर परिषद द्वारा जारी निविदा सूचना कमांकः 2024–25/9751–52 दिनांक 17.03.2025 को जारी की गई थी। उक्त निविदा शर्तो के **Section-IV (Payments and Consideration)** के क.म. संख्या 12 में राशि 15.00 लाख के स्थान पर 10.00 लाख पढा जावें। अन्य शर्ते यथावत रहेगी।

Raj.Samwad/C/24/13687 आयुक्त नगर परिषद, चित्तौड़गढ

बीकानेर नगर निगम

नगर निगम मार्ग, बीकानेर (राजस्थान), फोन :– 0151–2226902, 0151–2226905
E-mail :- nagarnigambikaner@gmail.com, Web Site :- www.bikanermc.org

क्रमांक/यंत्रालय/2024–25/5103 दिनांक : 19.03.2025

ए.आर.सी ई–निविदा सूचना संख्या 13/2024–25

बीकानेर नगर निगम को आगामी 02 वर्ष के लिए विभिन्न प्रकार के वाहनों हेतु बेट्री आपूर्ति कार्य करने हेतु पंजीकृत फर्मो द्वारा निर्धारित प्रपत्र में ऑनलाईन ई–निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा कार्य से सम्बन्धित सम्पूर्ण विवरण एवं तिथि राज्य सरकार की ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in तथा नगर निगम बीकानेर की वेबसाईट www.bikanermc.org पर देखी व डाउनलोड की जा सकती है तथा निर्धारित अवधि तक ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in पर अपलोड की जा सकती है।

1. UBN Code :- DLB2425GSOB21588

राज.संवाद/सी/24/13696 आयुक्त नगर निगम, बीकानेर

नगर निगम ग्रेटर जयपुर

(नन्दपुरी रेल्वे अण्डरपास के पास, जगतपुरा, जयपुर)

क्रमांक :– जसअ/2025/338 दिनांकः 20.03.2025

ई–निविदा सूचना संख्या – 47 व 48/2024–25

केन्द्र एवं राज्य सरकार के सभी विभागों में पंजीकृत उपर्युक्त श्रेणी के ठेकेदारों एवं नगर निगम ग्रेटर, जयपुर के पंजीकृत निविदाताओं से अधिशाषी अभियन्ता जगतपुरा जोन से संबंधित विकास कार्यो हेतु निविदाए आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख टेण्डर शर्त आदि सम्पूर्ण विवरण नगर निगम ग्रेटर, जयपुर की वेबसाईट www.jaipurmc.org.com व राजस्थान सरकार के पोर्टल http://sppp.raj.nic.in तथा http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी व ड़ाउनलोड़ की जा सकती है। उक्त निविदाओं को (sppp.rajasthan.gov.in) पोर्टल पर अपलोड करवा दिया गया है।
UBN NO.-JMC2425WSOB01599 To JMC2425WSOB01600)

राज.संवाद/सी/24/13705 अधिशाषी अभियन्ता जगतपुरा जोन नगर निगम ग्रेटर, जयपुर

व्यक्ति को लिफ्ट मांगना महंगा पड़ा

मनोहरपुर, (निसं)। थाना क्षेत्र के दौसा पुलिया के पास रविवार देर रात्रि को एक व्यक्ति को लिफ्ट मांगना महंगा पड़ गया। जानकारी अनुसार महेश कुमार बेनीबाल पुत्र श्रवण लाल रैगर गठवाड़ी निवासी ने थानाधिकारी मनोहरपुर में एक शिकायत दर्ज कराई है, जिसमें उन्होंने बताया है कि 23-24 मार्च की रात को करीब एक बजे से दो बजे के बीच वह कैटरिंग का काम कर घर जा रहा था कि एक गाड़ी वाले ने उसे लिफ्ट दी। इस दौरान गाड़ी में बिठाकर मारपीट की और उसके पास 1000 रुपये छीन लिये और फोन से 8 हजार रुपए निकाल लिये। महेश कुमार बेनीबाल ने बताया कि गाड़ी में 6 लड़के थे, जिन्होंने उन्हें पीटा और उनका फोन और पैसे छीन लिए। उन्होंने आगे बताया कि उन्हें भीखावाला की तरफ ले जाया गया और फिर नवलपुरा पेट्रोल पंप के पास उतार दिया गया। इस मामले में थानाधिकारी मनोहरपुर ने केस दर्ज कर लिया है।

- गाड़ी में बिठाकर मारपीट की और उसके पास 1000 रुपये छीन लिये और फोन से आठ हजार निकाल लिये

ओवरलोड ट्रैक्टर-ट्रॉली में आग लगी

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के केसरीसिंहपुर में एक बड़ा हादसा होते-होते बच गया। कमीनपुरा स्थित शुगर मिल के पास गन्ने की पराली से लदी ट्रैक्टर-ट्रॉली में आग लग गई। ओवरलोड ट्रैक्टर-ट्रॉली सड़क किनारे लगी 11 हजार वोल्ट की बिजली लाइन से टकरा गई। इससे निकली चिंगारी ने पराली को आग के हवाले कर दिया। आग ने देखते ही देखते विकराल रूप धारण कर लिया। सूचना मिलते ही केसरीसिंहपुर नगर पालिका की फायर ब्रिगेड़ मौके पर पहुंची, लेकिन तब तक ट्रैक्टर-ट्रॉली पूरी तरह जल चुकी थी। गनीमत यह रही कि ड्राइवर और उसका सहयोगी आग लगते ही ट्रैक्टर-ट्रॉली से कूद गए। इससे कोई जनहानि नहीं हुई। जानकारी के अनुसार गन्ने की पराली की गांठें बनाकर ट्रॉली पर लादकर श्रीगंगानगर की ओर ले जाया जा रहा था। ट्रैक्टर-ट्रॉली न सिर्फ ओवरलोड थी, बल्कि काफी ऊंचाई तक लदी थी।

अज्ञात कारणों से निजी ऑयल मिल के गोदाम में आग लगी

नदबई, (निसं)। नदबई डहरा रोड पर स्थित निजी ऑयल मिल के गोदाम में रविवार देर रात अज्ञात कारणों से आग लग गई। गोदाम से धुंआ उठता देख ऑयल मिल में कार्य कर रहे श्रमिकों ने आग बुझाने का प्रयास किया, बाद में नगर पालिका दमकल की सहायता से आग पर काबू पाया गया, लेकिन इससे पहले गोदाम में रखा करीब 15 लाख रुपए का बारदाना जलकर राख हो गया।

विभागीय सूत्रों की मानें तो रविवार देर रात करीब ग्यारह बजे अज्ञात कारणों से आग लगने के चलते गोदाम से धुंआ निकलने लगा। धुआं निकलता देख चौकीदार ने मिल मालिक सहित अन्य श्रमिकों को आग के बारे में बताया। श्रमिकों ने निजी डीपबोर की सहायता से गोदाम में लगी आग को बुझाने का प्रयास किया। बाद में नगर पालिका दमकल की सहायता से आग पर काबू पाया गया लेकिन, इससे पहले गोदाम में रखा लाखों रुपए का बारदाना जलकर बर्बाद हो गया। इस संदर्भ में देर शाम तक पुलिस में मामला दर्ज नहीं हुआ।

- आग लगने से 15 लाख का बारदाना जलकर राख

नगर पालिका दमकल की सहायता से आग पर काबू पाया गया।

कार्यालय नगर परिषद, केकड़ी जिला अजमेर (राज.)

Email ID – npkekri2011@gmail.com (O) : 01467-220002, 220019 web site : www.urban.rajasthan.gov.in/ulbkekri

क्रमांक : न.प.के./विकास/2024–25/4852 दिनांक : 20.03.2025

-: ई निविदा (36/2024–25) (NIB NUMBER - DLB2425A6728) :-

एतद्द्वारा यह है कि राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में अधोलिखित 01 कार्य के लिए ई प्रोक्योरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है एवं किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय में आकर देखी जा सकती है। निविदा के कुल कार्य – 01 (एक)
UBN NO. – 1. DLB2425WSOB21787

सभापति नगर परिषद केकड़ी आयुक्त नगर परिषद केकड़ी
राज.संवाद/सी/24/13819

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

क्रमांक :- राजकाज 14322227 दिनांक :- 21/03/2025

ई-बिड सूचना संख्या :- जोन विद्युत-I/18/2024-25

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से विद्युत कार्यो हेतु संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया से विद्युत कार्यो हेतु ऑनलाईन बिड आमंत्रित की गई है। इन कार्यो की अनुमानित लागत, बिड बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, बिड शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट www.jodhpurjda.org, www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। NIB Code : JOD2425A0187, UBN No. :- JOD2425WSOB00430 To JOD2425WSOB0031

राज.संवाद/सी/24/13761 अधिशाषी अभियंता (विद्युत-I)

Office Of The District Education Officer (HQ) Secondary Jalore (Raj.)

No. deohqsecjalore/Accounts/2024-25/582 Date: 22.03.2025

SHORT TERM NOTICE INVITING TENDER No.-2

Bid of short term procurement of supply of complete Ladies & Gents Bicycles procurement is inviting form interest bidders up to 27-03-2025 time 11:00 AM. Other particulars of the bid may be visiting on the procurement portal https://eproc.rajasthan.gov.in & https://sppp.rajasthan.gov.in of the site.

S. No.	Item / Description of work	Estimated Cost (In Rupees)	UBN
01.	Supply of Complete Ladies & Gents Bicycles 20"	1,03,12,326/-	EDU2425GLOB00125

DIPR/C/4195/2025 (Bhera Ram) Dist. Education Officer, (HQ.) Secondary, Jalore

कार्यालय नगरपालिका सरवाड़ जिला–अजमेर, (राज0)

E mail. npsarwad@gmail.com Address Ajmer Kota Road Sarwar PH.No. 01496-230034

क्रमांक : न.पा.स./निर्माण/2024–25/2202 दिनांक : 20.03.2025

ई–निविदा सूचना संख्या (29/2024–25)
(NIB NUMBER - DLB2425A6737)

एतद्द्वारा यह है कि राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यो के लिए राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में मोहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर भी उपलब्ध हैं एवं किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय में आकर देखी जा सकती है।
निविदा के कुल कार्य –05 (पांच)
UBN NO. – 1. DLB2425WSOB21829 2. DLB2425WSOB21830 3. DLB2425WSOB21831 4. DLB2425WSOB21832 5. DLB2425WSOB21833

राज.संवाद/सी/24/13800 अध्यक्ष अधिशाषी अधिकारी

बीकानेर नगर निगम

नगर निगम मार्ग, बीकानेर (राजस्थान) फैक्स :- 0151-2226906, फोन :- 0151-2226902, 0151-2226905
E-Mail Address :- nagarnigambikaner@gmail.com, Web Site :- www.bikanermc.org

क्रमांक :- निर्माण/2024-25/5202 दिनांक :- 20/03/2025

ई - निविदा-सूचना सं0 119/2024-25

नगर निगम बीकानेर की ओर से विभिन्न कार्यो (कुल 01 कार्य) के लिये केन्द्र व राज्य सरकार के अभियांत्रिकी विभागों में "ऐऐ", "ऐ" श्रेणी में पंजीकृत संवेदको एवं नगर निगम में उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत निविदादाताओं से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूमेंट प्रक्रिया से ऑन लाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट www.bikanermc.org Web site www.sppp.raj.nic.in से व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
निविदा की कुल लागत 11.23 लाख
UBN No. : DLB2425WSOB21715

राज.संवाद/सी/24/13765 आयुक्त, नगर निगम, बीकानेर

बीकानेर नगर निगम

नगर निगम मार्ग, बीकानेर (राजस्थान), फोन नं:– 0151–2226902, 2226905,
Email Address :- nagarnigambikaner@gmail.com, Website :- www.bikanermc.org

क्रमांक/भण्डार/2024–25/5110 दिनांकः– 19.03.2025

(ई–निविदा सूचना सं. 02/2024–25)

बीकानेर नगर निगम को विभिन्न आयोजनों में भोजन, अल्पाहार, चाय, कॉफी, मिनरल वॉटर, पानी की बोतल, नींबू पानी, छाछ, पानी के केम्पर, बफर सिस्टम भोजन (सर्दियों में) एवं बफर सिस्टम भोजन (गर्मियों में) उपलब्ध करवाने हेतु 02 वर्ष के लिए पंजीकृत फर्मो निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाईन निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं। ए.आर.सी निविदा से सम्बधित विवरण राज्य सरकार की ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.raj.nic.in तथा नगर निगम, बीकानेर की वेबवाईट www.bikanermc.org पर देखी व डाउनलोड की जा सकती हैं।
निविदा का कुल लागतः– 25 लाख
UBN Number : DLB2425SLOB21587

राज.संवाद/सी/24/13700 आयुक्त नगर निगम, बीकानेर

दाह संस्कार करने पहुंचे लोगों पर मधुमक्खियों ने हमला किया

पाली, (निसं)। पाली में एक बुजुर्ग के शव को अंतिम संस्कार के लिए लेकर जा रहे 70 से 80 लोगों पर मधुमक्खियों ने हमला कर दिया। लगभग सभी लोगों को मधुमक्खियों ने डंक मारे। तीन गंभीर घायलों को उपचार के लिए पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लाया गया, जहां उनका उपचार जारी है। वहीं हमले से भयभीत ग्रामीण शमशान घाट में शव को छोड़कर भाग गये।

जानकारी के अनुसार, पाली जिले के निकट गुड़ा एंदला गांव निवासी बुजुर्ग पूराराम (65) का रविवार रात को देहांत हो गया था। सोमवार सुबह करीब ग्यारह बजे मृतक के परिजन, रिश्तेदार और ग्रामीण शव लेकर अंतिम संस्कार के लिए शमशान घाट जा रहे थे। इस बीच उन्होंने शमशान में बॉडी रखी तो अचानक मधुमक्खियों के झुंड ने उन पर हमला कर दिया। इससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई। सब बचने के लिए इधर-उधर भागे। मधुमक्खियों ने लगभग सभी को डंक मारे। घायलों को उपचार के लिए गुड़ा एंदला, गुंदोज हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां से तीन गंभीर घायल गुड़ा एंदला निवासी देवाराम (65) पुत्र भीमाराम, हिमताराम (62) निवासी कानेलाव गांव और मंगलाराम (40) पुत्र पूराराम घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए बांगड़ हॉस्पिटल लाया गया, जहां फिलहाल उनका उपचार जारी है। वहीं कुछ घायल गुंदोज और गुड़ा एंदला हॉस्पिटल में उपचार ले रहे हैं।

- 70 से 80 लोगों पर मधुमक्खियों ने हमला किया, तीन गंभीर घायलों को पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लाया गया
- हमले से भयभीत ग्रामीण शमशान घाट में ही शव को छोड़कर भाग गये

घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उनका उपचार किया।

जोधपुर में वकील की हत्या के विरोध में जालोर के वकीलों में भी आक्रोश

जालोर, (कासं)। जोधपुर में एक वकील की हत्या और मारपीट की घटना के विरोध में आक्रोशित वकीलों ने जालोर में भी विरोध प्रदर्शन किया। जालोर में सोमवार को वकीलों ने एक दिन न्यायालयों उपस्थिति नहीं देकर न्यायिक कार्यो का बहिष्कार किया। वहीं दोपहर बाद अभिभाषक संघ की ओर से अध्यक्ष देवेन्द्र सिंह राठौड़ के नेतृत्व में राज्यपाल के नाम अति. कलेक्टर राजेश मेवाड़ा को ज्ञापन देकर दोषियों को गिरफ्तार कर कार्रवाई की मांग की है।

संघ के उपाध्यक्ष अश्विन राजपुरोहित ने बताया कि 14 मार्च को जोधपुर में एक अधिवक्ता विनोद जाखड़ के साथ मारपीट की गई थी, वहीं 20 मार्च को एक अधिवक्ता चंदनसिंह की झालामंड में बर्बर हमला कर हत्या की गई, जिसके विरोध में जोधपुर हाईकोर्ट एडवोकेट एसोसिएशन एवं लॉयर्स एसोसिएशन के आव्हान पर जालोर में सोमवार को जिला एवं सैशन न्यायालय एवं उसके अधिनस्थ न्यायालयों में अधिवक्ताओं ने उपस्थिति नहीं देकर विरोध प्रकट किया। दोपहर में अधिवक्ताओं ने राज्यपाल के नाम सौंपे ज्ञापन में बताया कि आए दिन अधिवक्ताओं पर हो रहे हमले एवं एक अधिवक्ता की हत्या की घटना का कड़ा विरोध जताते हुए घटना के आरोपियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करने की मांग की है।

इस दौरान संघ के अध्यक्ष देवेन्द्रसिंह राठौड़, उपाध्यक्ष अश्विन राजपुरोहित, सचिव प्रवीण कुमार भादरु, वरिष्ठ अधिवक्ता सरदार खान खोखर, अधिवक्ता मंगलसिंह राजपुरोहित, दौलत बाराडा, उत्तम गहलोत, नवीन कुमार गहलोत, शकील खान मेहर, सुरेंद्र चौहान, छोटूसिंह, फारुख कुरैशी, अनन्या खान, संजय खान, चंदनमल छीपा, रणजीतसिंह, विक्रमसिंह, प्रवीण बोस, धीमाराम, गणपत राजपुरोहित सहित कई अधिवक्ता मौजूद थे।

- वकील की हत्या और मारपीट की घटना के विरोध में वकीलों ने धरना प्रदर्शन किया
- वकीलों ने एक दिन न्यायालयों उपस्थिति नहीं देकर न्यायिक कार्यो का बहिष्कार किया

जालोर में अभिभाषक संघ ने अधिवक्ता की हत्या के विरोध में कार्यवाही की मांग को लेकर एडीएम राजेश मेवाड़ा को ज्ञापन सौंपा।

Post Graduate Institute of Veterinary Education and Research

A Centre of Excellence for Higher Veterinary Education)
(Rajasthan University of Veterinary and Animal Sciences),
N.H.-11, Agra Road, Jamdoli, Jaipur – 302031

F.6 ( ) /PGIVER/Purch/2025/3600 Date :- 20/03/2025

ई-बोली आंमत्रण सूचना सं 01 /2025-26

इस महाविद्यालय में एक वर्ष तक की अवधि के लिए सुरक्षा व्यवस्था कार्य हेतु ऑनलाईन ई बोली आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	विवरण	अनुमानित लागत	बोली प्रतिभूति राशि	बोली/ निविदा शुल्क	आई.आई.एस.एल. की प्रक्रिया शुल्क
1.	सुरक्षा व्यवस्था कार्य	रू. 40 लाख	रू. 80000/–	रू. 500.00	रू. 1000.00
2	ई–प्रोक्योरमेन्ट के माध्यम से बोली प्रपत्र व शर्ते डाउनलोड करने, अपलोड प्रारम्भ/प्रस्तुत करने की दिनांक व समय				21.03.2025 से 03.04.2025 समय दोपहर 04 बजे तक
3	तकनीकी बोली खुलने की दिनांक व समय				04.04.2025 को दोपहर 2.30 बजे

बोली प्रपत्र, बोली शर्ते एवं अन्य विवरण विभाग की वेबसाईट www.rajuvas.org स्टेट पोर्टल की वेबसाईट http://sppp.raj.nic.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध देखी/प्राप्त की जा सकती है।
UBN No :- VAU2425SLB00155
TENDER ID : 2025_RAJUV_453952_1

राज.संवाद/सी/24/13714 अधिष्ठाता

कार्यालय नगरपालिका, सोजत (पाली)

E. Mail Id - eombsojat@yahoo.com eosojatcity.lsg@rajasthan.gov.in Phone No 02960 – 222028

क्रमांक/नपासो/2024–25/7634 दिनांक : 20.03.2025

ई–निविदा आमंत्रण सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगरपालिका सोजत. द्वारा निम्न कार्यो हेतु वित्तीय वर्ष 2025–26 के लिये अनुबंध पर सेवाए लेने/ठेका देने हेतु इच्छुक बोलीदाता/संवेदक जो कि राजस्थान अनुबंधित श्रमिक (नियमन एवं उन्नमुलन) अधिनियम 1970, कर्मचारी भविष्यनिधि अधिनियम, 1952, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948, वस्तु एवं सेवा कर, आयकर (पेन नम्बर) तथा राजस्थान दुकान वाणिज्यिक अधिनियम 1958 या इण्डियन पार्टनषिप एक्ट 1932 के अन्तर्गत या इण्डियन कम्पनी एक्ट 1956 के अन्तर्गत पंजिकृत व अनुभवी हो परन्तु प्लेसमेंट ऐजेन्सीज के माध्यम से मानव संसाधन का उपापन नही किया जायेगा, से वार्षिक दर पर संविदा करने बाबत् दो रूपो में ई–निविदा प्रस्ताव यथा तकनिकी बोली प्रस्ताव एवं वित्तिय बोली प्रस्ताव ई–प्रोक्युरमेंट ऑन–लाईन प्रकिया द्वारा निम्नानुसार आमत्रित की जाती है–

निविदा के कुल कार्य	कुल कार्य 01 UBN No– DLB2425WSRC21749
निविदा जारी दिनांक	20.03.2025 समय सुबह 10.00 बजे
निविदा दस्तावेजों को डाउनलोड करने शुरुआती दिनांक व समय	21.03.2025 समय सुबह 11.00 बजे
निविदा दस्तावेज ऑनलाईन करवाने हेतु अन्तिम दिनांक व समय	01.04.2025 समय सांय 06.00 बजे
निविदा दस्तावेजो/डीडी को जमा करवाने हेतु अन्तिम दिनांक व समय	02.04.2025 समय दोपहर 12.00 बजे तक
बिड खोलने की दिनांक व समय	02.04.2025 समय दोपहर 03.00 बजे
वित्तीय बिड खोलने की दिनांक व समय	Will be Intimated Letter to the technically Qualified Bidders

नोट :– निविदा राशि व धरोहर राशि का डिमाण्ड ड्राफ्ट नगरपालिका सोजत के नाम देय होगा।
राज.संवाद/सी/24/13732 अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय नगर पालिका मॉगरोल जिला बांरा (राज0)

क्रमाकः–न.पा.मॉ./स्टोर/2025/4769 दिनांकः– 20.03.2025

Corrigendum

राजकीय/अर्द्धशासकीय/स्वायत्तशासी विभागों में सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों को सूचित किया जाता हैं कि पालिका निविदा सूचना कमांक 4492–4496 दिनांक 10.03.2025 के द्वारा दिनांक 26.03.2025 को आमंत्रित निविदा में अपरिहार्य कारणों से निम्न संशोधन किया किया जाता हैं – उक्त निविदा में तकनीकी बिड दस्तावेज कम सं. 1 से 17 तक सम्मिलित माना जावें।

1.	राजस्थान अनुबंधित श्रमिक (नियमन एवं उन्मूलन) अधिनियम 1970 से पंजीकृत की प्रति. (140 श्रमिको से अधिक) 31.12.2025 तक वैध प्रमाण पत्र संलग्न करे।
2.	कर्मचारी भविष्य निधि अधिनियम 1952 के प्रमाण पत्र की प्रति
3.	कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 के प्रमाण पत्र की प्रति
4.	वस्तु सेवा कर प्रमाण पत्र की प्रति
5.	एन.जी.ओ. का आयकर प्रमाण पत्र की प्रति
6.	राजस्थान दुकान या वाणिज्य अधिनियम 1958 या इण्डियन पार्टनरशीप एक्ट 1932 अथवा इण्डियन कम्पनी एक्ट 1956 के अन्तर्गत जारी लाईसेन्स प्रमाण पत्र
7.	फर्म/एन.जी.ओ. का LIN रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र
8.	SAN रजिस्ट्रेशन की प्रति
9.	फर्म/एन.जी.ओ. का ISO रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र
10	फर्म/एन.जी.ओ. का MSME में रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र
11	फर्म/एन.जी.ओ. का दिसम्बर 2024 का EPF,ESI व GST बकाया नही होने का क्लीयरेंस सर्टिफिकेट की प्रति
12.	फर्म/एन.जी.ओ. का वर्ष 2022–23 एवं 2023–24 (प्रतिवर्ष 1.70 करोड रुपये से अधिक) टर्नओवर की प्रति, ऑडिट रिपोर्ट व बैलेन्स शीट यू.डी.एन. सहित सलंग्न करे।
13.	फर्म/एन.जी.ओ. का वर्ष 2022–23 एवं 2023–24 का प्रतिवर्ष का किसी भी नगर परिषद/नगर पालिका/नगर निकाय में प्रतिवर्ष कम से कम 130 कर्मचारी का श्रमिक आपूर्ति का एकल अनुभव मय कार्यादेश की प्रमाणित प्रति संलग्न करें।
14.	फर्म/एन.जी.ओ. का विगत 6 माह के अन्तर्गत का किसी भी नगर परिषद/नगर पालिका/ नगर निकाय का 145 श्रमिको के कार्यादेश की प्रति
15	फर्म/एन.जी.ओ. का नगर पालिका/नगर निकाय/नगर परिषद में कार्यरत कर्मचारी/अधिकारी/पार्षद/सभापति से रक्त संबंधी व ब्लेक लिस्टेड नही होने का 100 रुपये का नोन–ज्यूडिशील स्टाम्प पर शपथ पत्र मय नोटेरी संलग्न करें।
16	क्रम संख्या 1 से 15 तक शर्ते होना अनिवार्य है अन्यथा निविदादाता की निविदा को निरस्त समझा जायेगा।

शेष शर्ते यथावत रहेगी। अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका मॉगरोल
राज.संवाद/सी/24/13809

हत्या के आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर एक व्यक्ति टॉवर पर चढ़ा

पांच फरवरी को परिवार के लोगों पर फायरिंग हुई थी, जिसमें उसके भतीजे की मौत हो गई थी

- मृतक के परिजनों ने 17 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई थी, जिसमें से दस की गिरफ्तारी हो गई है, बाकी आरोपियों को गिरफ्तार किये जाने की मांग की
- देर शाम तक हरिचन्द टॉवर से नहीं उतरा, मोबाइल भी स्विच ऑफ आ रहा है, प्रशासन की समझाइश जारी

भरतपुर, (निसं)। कोतवाली थाना क्षेत्र में मुखर्जी नगर में एक व्यक्ति मर्डर के आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर बीएसएनएल के टावर पर चढ़ गया। व्यक्ति की मांग है कि डीग के सदर थाना इलाके में पांच फरवरी को उसके परिवार के लोगों पर फायरिंग हुई थी, जिसमें उसके भतीजे की मौत हो गई थी। मृतक के परिजनों ने 17 लोगों के खिलाफ एफआईआर डीग जिले में दर्ज करवाई थी, जिसमें से दस की गिरफ्तारी हो गई है। बाकी आरोपियों की भी जल्द ही गिरफ्तारी की जाए। इसके अलावा आरोपी पक्ष उन्हें आये दिन जान से मारने की धमकियां दे रहे हैं। जब इसके बारे में पुलिस से शिकायत की जाती है तो, पुलिस कोई कार्रवाई नहीं करती है।

कोतवाली थाना अधिकारी विनोद मीणा ने बताया कि हमें सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति जिंदल हॉस्पिटल के पास बीएसएनएल के टावर पर चढ़ गया है। जिसके बाद जाब्ते के साथ मौके पर आए। व्यक्ति का नाम हरिचंद है, जो खोहरी गांव जिला डीग का रहने वाला है। इनका सदर थाना डीग में हत्या का मामला दर्ज है। हरिचंद की मांग है कि उस मामले में आरोपियों की गिरफ्तारी की जाए। व्यक्ति से समझाइश की जा रही है। डीग पुलिस के अधिकारियों से भी व्यक्ति की बात करवाई जा रही है। जिससे व्यक्ति टावर से नीचे उतर सके। देर शाम तक हरिचन्द टॉवर से नहीं उतरा। उसका मोबाइल भी स्विच ऑफ आ रहा है। डीग के एएसपी अखलेश शर्मा भी मौके पर आए और वार्ता की लेकिन समाधान नहीं निकला। मौके पर सीओ पंकज यादव आईपीएस अधिकारी एवं कोतवाल विनोद मीणा, एसडीएम राजीव शर्मा तहसीलदार सहित तमाम अधिकारी समझाइश कर रहे हैं। रात होने पर भी टॉवर से नहीं उतरने से परेशानी बढ़ रही है। हरिचंद देर शाम अंधेरे में भी टॉवर पर चढ़ा हुआ है।

भतीजे की हत्या के आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर एक व्यक्ति टॉवर पर चढ़ गया।

जानकारी के अनुसार ओमप्रकाश पक्ष और हरिचंद पक्ष का जमीन के विवाद को लेकर झगड़ा चल रहा है। 25 जनवरी को ओमप्रकाश और हरिचंद पक्ष का झगड़ा हो गया था। ओमप्रकाश पक्ष की शिकायत पर पुलिस ने हरिचंद पक्ष के तीन लोग प्रदीप, मोहन, गुलजार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। पांच मार्च को तीनों की जमानत हुई। तीनों लोग घर आ रहे थे। इस दौरान ओमप्रकाश पक्ष ने रास्ते में प्रदीप, मोहन और गुलजार पर फायरिंग कर दी। वहां से प्रदीप और गुलजार अपनी जान बचाकर भाग गए और प्रदीप के गोली लगी और वह वहीं गिर गया।

इसके बाद ओमप्रकाश फिर से हरिचंद के घर पहुंचा। ओमप्रकाश पक्ष ने हरिचंद के घर पर फिर से फायरिंग कर दी, जिसमें गौरव और ओमप्रकाश के गोली लग गई। घटना के बाद गौरव, प्रदीप और ओमप्रकाश को आरबीएम अस्पताल लाया गया, जहां ओमप्रकाश की मौत हो गई और प्रदीप, गौरव को जयपुर रेफर कर दिया गया। घटना के बाद हरिचंद पक्ष ने 17 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई, जिसमें से पुलिस ने छह लोगों को गिरफ्तार कर लिया। अब हरिचंद की मांग है कि जल्द से जल्द बाकी आरोपियों को भी गिरफ्तार किया जाए।

13 वर्षीय किशोर का खून से लथपथ शव मिला

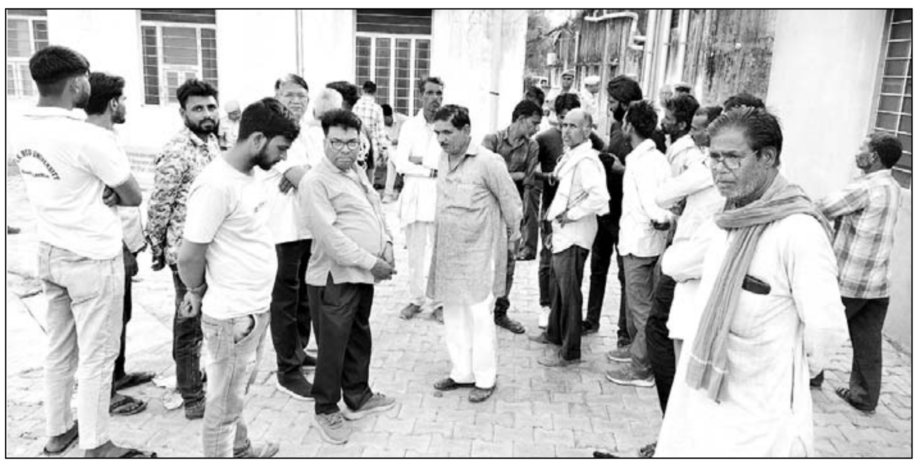

उप जिला अस्पताल की मोर्चरी के बाहर जमा लोगों की भीड़।

- मृतक के सिर पर चोट के निशान, प्रथमदृष्टया हत्या की आशंका जताई
- मृतक किशोर कक्षा 9 का छात्र था और घर में सबसे बड़ा था, मृतक की दो बहनें हैं

निवाई, (निसं)। नला रोड पर स्थित कच्ची बस्ती में स्थित एक मकान में 13 वर्षीय किशोर का शव मिलने से सनसनी फैल गई। लोगों ने घटना की जानकारी पुलिस को दी। सूचना पर डीवाईएसपी मृत्युंजय मिश्रा व थाना अधिकारी रामजीलाल बैरवा मय जाप्ते के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर एंबुलेंस की सहायता से राजकीय सामुदायिक चिकित्सालय लाया गया।

थानाधिकारी रामजीलाल बैरवा ने बताया कि मृतक की पहचान पंकज पुत्र कमलेश रैगर निवासी लाखनपुर बौंली हाल निवासी कच्ची बस्ती के पास नला रोड के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि मौके पर एमयू व एफएसएल टीम को साक्ष्य जुटाने के लिए बुलाया गया है। टीम ने मौके पर पहुंचकर साक्ष्य जुटाए हैं। थानाधिकारी ने बताया कि मृतक के सिर पर चोट के निशान दिखाई दे रहे हैं।

इससे प्रथमदृष्टया में हत्या का मामला दिखाई दे रहा है। मृतक किशोर कक्षा 9 का छात्र था और घर में सबसे बड़ा था। मृतक की दो बहनें हैं। मृतक के पिता कारीगर का काम करते हैं। घटना के समय घर पर कोई नहीं था। मौके पर सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा हो गई और अस्पताल में कोहराम मच गया। परिजनों का रो-रोककर बुरा हाल था, जिन्हें लोग संभाल रहे थे। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

आईटीबीपी जवान की पत्नी के खाते से राशि निकाली

- ठगों ने लिंक भेजकर ठगी की, पीड़ित ने ऑनलाइन साइबर सेल में रिपोर्ट दर्ज करवाई

खेतड़ी, (निसं)। सिंघाना थाना क्षेत्र के डूमोली के एक आईटीबीपी जवान की पत्नी के खाते से 98 हजार रुपए की ठगी करने का मामला सामने आया है। पीड़ित की ओर से ऑनलाइन साइबर सेल में रिपोर्ट भी दर्ज करवाई गई है, लेकिन अभी तक रूपए का कोई समाधान नहीं हो पाया है।

आईटीबीपी में कार्यरत जवान सुबेसिंह ने बताया कि वह वर्तमान में उत्तराखंड में तैनात है। उसके पिता के पास 8 फरवरी को एक अंजान नंबर से फोन आया। इस दौरान उसने अस्पताल में ईंट मंगवाने के लिए कहा तथा रूपए फोन-पे पर डालने की बात कही। जवान का पिता अनपढ़ होने के कारण उसने अपनी पुत्रवधू सरोज को फोन दे दिया। इस दौरान जवान की पत्नी से फोन-पे नंबर लेकर एक लिंक भेजा तो खाते से दो बार में 98 हजार रुपए पार कर दिए। इस दौरान पीड़ित सरोज ने पैसे कट जाने की जानकारी अपने पति को दी तो उसने फोन पर आए नंबर पर काल किया तो वह बंद पाया। जब उसकी जानकारी जुटाई तो अलीगढ़ के एक बैंक खाते में रूपए ट्रांसफर होना पाया। घटना को लेकर सिंघाना थाने में पंहुचे तो साइबर सेल में रिपोर्ट देने की बात कही। जिस पर जवान सुबेसिंह की ओर से ऑनलाइन रिपोर्ट दी गई। पीड़ित ने बताया कि उसकी पत्नी के खाते से 98 हजार रुपए निकल जाने की रिपोर्ट देने के बाद भी कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हो रही है। इस दौरान पीड़ित ने पुलिस से मामले में प्रभावी कार्रवाई कर रूपए वापस दिलाने की गुहार लगाई है।

एडीए के जेईएन की बहाली की मांग, राजपूत समाज के लोगों ने प्रदर्शन किया

- समाज के प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा, जेईएन के निलंबन को रद्द करने की मांग की।
- अजमेर विकास प्राधिकरण में कर्मचारी भी हुए लामबंद, कार्य बहिष्कार कर विरोध जताया

अजमेर, (कासं)। वैशाली नगर निवासी डॉ. कुलदीप शर्मा के आवास पर एडीए द्वारा की गई कार्यवाही के बाद प्रशासन द्वारा एडीए के जेईएन रघुनंदन सिंह को बर्खास्त कर दिया। निलंबित कनिष्ठ अभियंता रघुनंदन सिंह की बहाली की मांग को लेकर सोमवार को राजपूत समाज सड़कों पर उतर गया। सैकड़ों की संख्या में राजपूत समाज के लोग जिला कलेक्ट्रेट पहुंचे और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी कर प्रदर्शन किया। समाज के प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर प्रशासन पर जातिवाद का आरोप लगाते और जेईएन के निलंबन को तत्काल रद्द करने की मांग की।

प्रदर्शन के दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच तीखी नोंक झोंक भी हुई और गुस्साए समाज के युवाओं में बैरिकेडिंग गिरा दिए और मुख्यद्वार के बाहर सांकेतिक धरने पर बैठ गए। वहीं इस मामले में अब अजमेर विकास प्राधिकरण के कर्मचारियों ने कार्य बहिष्कार कर धरना दिया। राजपूत समाज के नेता रणजीत सिंह व दशरथ सिंह सकराय ने बताया कि 20 मार्च को अजमेर विकास प्राधिकरण का दस्ता पंचशील नगर ए ब्लॉक के भूखंड संख्या ए-57 पर अतिक्रमण हटाने पहुंचा था। यह कार्रवाई उपायुक्त (उत्तर) सूर्यकांत शर्मा के आदेश पर की गई थी। टीम का नेतृत्व तहसीलदार (उत्तर) को करना था, लेकिन वे मौके पर मौजूद नहीं थे। दस्ते ने पाया कि वहां कोई निर्माण सामग्री नहीं थी और न ही पड़ौसी भूखंड ए-56 के स्वामी नितिन दरगड़ वहां मौजूद थे। इसी दौरान पास में रहने वाले डॉ. कुलदीप शर्मा वहां पहुंचे और दस्ते को कार्रवाई से रोकने लगे। जब प्राधिकरण कर्मचारियों ने उन्हें समझाने की कोशिश की तो उन्होंने गाली-गलौच की और राजकीय कार्य में बाधा पहुंचाई। इस घटना के बाद डॉ. शर्मा ने कथित रूप से डॉक्टर्स एसोसिएशन और ब्राह्मण समाज को गलत जानकारी देकर उनके समर्थन में प्रशासन पर दबाव बनाया। समाज के पदाधिकारी कुलदीप सिंह शेखावत, महावीर सिंह राठौड़ ने कहा कि प्रशासन ने जातीय दबाव में आकर गलत फैसला लिया और जेईएन रघुनंदन सिंह को निलंबित कर दिया, जबकि उनकी कार्रवाई पूरी तरह से वैध थी। उन्होंने कहा कि जब एडीए ने अपनी रिपोर्ट में कार्यवाही को सही ठहराया है, तो फिर जेईएन का निलंबन क्यों किया गया।

राजपूत समाज के प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने जिला कलेक्टर लोक बधु को ज्ञापन में मांग की है कि जेईएन सिंह को तुरंत बहाल किया जाए। साथ ही डॉ. कुलदीप शर्मा ने राजकार्य में बाधा पहुंचाई थी उनके खिलाफ कार्यवाही करते हुए उन्हें गिरफ्तार किया जाए। राजपूत समाज ने चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगें पूरी नहीं हुईं तो प्रदेशव्यापी आंदोलन किया जाएगा।

वहीं अजमेर विकास प्राधिकरण कर्मचारी संघ द्वारा पंचशील नगर स्थित भूखंडा ए 56 पर अतिक्रमण हटाने को लेकर एडीए के कनिष्ठ अभियंता रघुनंदन सिंह चौहान को निलबिंत किए जाने के विरोध में उच्च अधिकारियों को ज्ञापन देकर सामूहिक अवकाश लिए जाने की बात कही है। कर्मचारी संघ के अध्यक्ष चंपा लाल नागौरा ने बताया कि उच्चाधिकारियों द्वारा आश्वस्त किया गया है कि प्रकरण की संपूर्ण जानकारी सक्षम अधिकारियों की जानकारी में लाई जाएगी। साथ ही दो दिन में उचित कार्यवाही की जाएगी। इस आश्वासन के बाद सामूहिक अवकाश निरस्त कर आधे दिन का अवकाश लेने का निर्णय लिया। साथ ही आने वाले दो दिनों में सकारात्मक कार्यवाही नहीं होने पर आगामी रणनीति तय करने की बात कही है।

बच्चे के अपहरण का प्रयास

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ीनगर केसीसी टाउनशीप के न्यू मार्केट के पास रविवार देर शाम को एक बाइक पर सवार होकर आए दो युवकों ने बच्चे को रास्ता पूछने के बहाने बाइक पर बैठा ले गए। बाइक सवार युवकों ने बच्चे को राजीव कॉलोनी के पास रेलवे लाइन पर मारपीट कर छोड़ गए और जाते समय मोबाइल लेकर फरार हो गए। घटना की सूचना के बाद परिवार दहशत के माहौल में है।

छात्र के पिता अशोक कुमार ने बताया कि उसका लड़का धीरज (11) केवी स्कूल में पांचवी कक्षा में पढ़ता है। रविवार शाम करीब आठ बजे न्यू मार्केट से मोबाइल लेकर सामान लेने गया था। इस दौरान धीरज ने अपने दादा श्योदान को फोन करके कहा कि उसे दो लड़के न्यू मार्केट से जबरदस्ती मुहं बांध कर के बाइक पर बैठा कर गंदे नाले के पास लेकर आ गए, जल्दी से मुझे आकर ले जाओ। फोन आने के बाद अशोक बेटे को लेने पहुंचा तो धीरज घबराया हुआ था और उसने कहा कि दो लड़के बाइक पर आए और उन्होंने सिंघाना का रास्ता पूछने के लिए रोका, जैसे ही उनके पास पहुंचा तो मुहं दबा कर बाइक पर बैठा कर गंदे नाले के पास ले जाकर मारपीट की और धमकी दी की तेरे हाथ की नस काट देंगे।

तांबा वायर, स्क्रैप व बैट्रियां चोरी करने वाली गैंग का पर्दाफाश

गैंग की मास्टर माइंड लक्ष्मा बावरिया तथा आरोपी पूरण उर्फ फल्या बावरिया गिरफ्तार

सांभरझील, (निसं)। पुलिस ने तांबा वायर, तांबा स्क्रेप वह बैट्री चोरी करने वाली गैंग का पर्दाफाश कर चोरी किया गया माल भी बरामद किया है। आरोपियों से पूछताछ की तो सीकर, डीडवाना कुचामन, रेनवाल, में चोरी की वारदातें करना स्वीकार किया है।

एसपी आनंद प्रकाश शर्मा ने बताया कि परिवादी शेख मोहम्मद उमर व सांवर मल कुमावत निवासी रेनवाल ने रिपोर्ट दर्ज करवाई कि 17 मार्च की रात्रि को मालावत बैट्री हाउस चौमूं रोड कस्बा रेनवाल में अज्ञात चोर दुकान का शटर तोड़कर इन्वर्टर बैट्रीयां, सीसीटीवी डीवीआर मशीन चुराकर ले गये एवं कस्बा रेनवाल के बाग के बालाजी के स्थित गणेश इलेक्ट्रोनिक्स वर्क्स का शटर तोड़कर लगभग एक क्विंटल ताम्बा वायर, ताम्बा स्क्रैप चुराकर ले गये। इस पर थाना रेनवाल पर मामला दर्ज कर अनुसंधान प्रारम्भ किया गया। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए चोरी की वारदातों का खुलासा करने व अभियुक्तों की शीघ्र गिरफ्तारी हेतु पुलिस टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा आसूचना संकलन व तकनीकी सहायता द्वारा नकबजनी की घटना में लिप्त गैंग का खुलासा करते हुए गैंग की मास्टर माइंड लक्ष्मा बावरिया तथा आरोपी पूरण उर्फ फल्या बावरिया को गिरफ्तार किया। घटना में प्रयुक्त वाहन हुण्डई क्रेटा कार व रैकी में प्रयुक्त वाहन मोटरसाइकिल को भी जप्त किया गया है। पुलिस टीम द्वारा चुराया गया सामान ताम्बा वायर, ताम्बा स्क्रैप व बैट्रियों को बरामद कर चोरी का माल खरीदने वाले कबाड़ी पोमी खटीक को भी गिरफ्तार किया गया है। आरोपिया लक्ष्मा बावरिया के खिलाफ विभिन्न थानों में चोरी नकबजनी के 10 प्रकरण दर्ज हैं। प्रकरण में अन्य शेष आरोपियों की तलाश व अनुसंधान जारी है।

जमीन पर स्टे

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने शहर की एक निजी स्कूल को सांगानेर तहसील के दांतली में पांच हजार वर्ग गज जमीन आवंटन के मामले में कब्जे और निर्माण पर यथा-स्थिति के आदेश दिए हैं। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने यह आदेश मैसर्स टेक्नोक्रेट एंड मैनेजर्स प्रा.लि. की याचिका पर दिए। याचिका में अधिवक्ता सुनील समदडिया ने बताया कि याचिकाकर्ता की योजना में सुविधा क्षेत्र के तौर पर स्कूल के लिए जमीन आरक्षित रखी गई थी।

सड़क दुर्घटना में छात्र की मौत, एक घायल

- मनाली में हुआ हादसा, जयपुर का छात्र घायल हुआ

श्रीगंगानगर, (निसं)। शहर के सरकारी मेडिकल कॉलेज के प्रथम वर्ष के छात्र नितीश मेहता की मनाली में एक सड़क हादसे में मौत हो गई। नितीश कोटपूतली का रहने वाला था।

इस घटना में नितीश का सहपाठी जयपुर निवासी रामसिंह भी गंभीर रूप से घायल हो गया। कॉलेज प्रशासन से मिली जानकारी के अनुसार कॉलेज के दस विद्यार्थी अपने स्तर पर घूमने के लिए मनाली गए थे। हालांकि इसकी सूचना कॉलेज प्रशासन को इनके घूमने जाने की जानकारी नहीं थी। इन विद्यार्थियों ने 20 मार्च को हॉस्टल और कॉलेज के गेट रजिस्टर पर घर जाने की एंट्री की थी। इसके बाद सभी मनाली के लिए निकल गए। मनाली में घूमने के लिए उन्होंने बाइक किराए पर ली। इसी में से एक बाइक स्लिप हो गई और इसे चला रहा स्टूडेंट नितीश मेहता करीब 40 फीट गहरी खाई में जा गिरा। नितीश की मौत हो गई जबकि बाइक पर पीछे बैठे राम सिंह की रीढ़ की हड्डी और सिर में चोट आई है। घटना की सूचना मिलने पर परिजन सीधे मनाली पहुंचे। नितीश का शव परिजन कोटपूतली ले गए जबकि रामसिंह का इलाज जयपुर के एक प्राइवेट अस्पताल में चल रहा है। रामसिंह के पिता बाबूलाल ने बताया कि वह घर पर सूचित करके ही मनाली गया था। इधर, कॉलेज प्रशासन को दुर्घटना होने के बाद ही बच्चों के इकट्ठे मनाली जाने की जानकारी मिली। कॉलेज के कार्यवाहक प्रिंसिपल डॉ. ब्रजेश महावर ने बताया कि स्टूडेंट्स ने एंट्री रजिस्टर में छुट्टी पर जाने की बात लिखी थी। दस विद्यार्थी छुट्टी पर गए थे। हालांकि कॉलेज प्रशासन को इस बारे में जानकारी नहीं थी कि स्टूडेंट्स इकट्ठे मनाली घूमने गए हैं।

महासंघ के हजारों कर्मचारी 26 से फार्मर रजिस्ट्री शिविरों का बहिष्कार करेंगे

पशुपालन विभाग के निर्दोष कर्मचारियों के विरुद्ध की जा रही दमनात्मक कार्यवाहियों का विरोध

- अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ ने प्रदर्शन कर अति. कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा

करौली, (निसं)। पशुपालन विभाग के निर्दोष कर्मचारियों के विरुद्ध की जा रही दमनात्मक कार्यवाहियों के विरोध में सोमवार को अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ के जिला अध्यक्ष राजेश शर्मा, ग्राम विकास अधिकारी संघ के जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह के नेतृत्व में कलेक्ट्रेट पर धरना प्रदर्शन करते हुए मुख्यमंत्री के नाम का अतिरिक्त जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापनमें चेतावनी दी है कि यदि निर्दोष कर्मचारियो को न्याय नहीं दिया गया तो 26 मार्च से महासंघ के कर्मचारी फार्मर रजिस्ट्री शिविरों का बहिष्कार करेंगे।

अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ के जिला अध्यक्ष राजेश शर्मा ने बताया कि विगत कुछ माह से पशुपालन विभाग के कर्मचारियों पर लगातार दमनात्मक कार्यवाही करते हुए 30 से ज्यादा कर्मचारियों को निलंबित कर दिया गया है। राजस्थान पशु चिकित्सा कर्मचारी संघ के द्वारा सक्षम स्तर पर विरोध दर्ज करवाने के बावजूद आज तक निलंबित कर्मचारियों को बहाल नहीं किया गया। पशुपालन विभाग के शासन सचिव द्वारा मनमाने तरीके से निर्दोष कर्मचारियों के विरुद्ध की जा रही दमनात्मक कार्यवाही के विरोध में 20 मार्च को महासंघ के प्रांतीय कार्यालय मंदिर श्री गोवर्धन नाथ जी चौड़ा रास्ता जयपुर में आपात बैठक आयोजित की गई। बैठक में दोषी अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही करवाने एवं निर्दोष कर्मचारियों को बहाल करवाने के लिए पशुपालन कर्मचारी संघ के समर्थन में चरणबद्ध आंदोलनात्मक गतिविधियां के तहत सोमवार को धरना प्रर्दान कर ज्ञापन सौंपा गया।

उन्होंने बताया कि द्वितीय चरण में 25 मार्च से महासंघ से संबद्ध समस्त कर्मचारी प्रतिदिन विरोधस्वरूप काली पट्टी बांधकर ड्यूटी पर जाएंगे। इसके बाद भी यदि 30 से ज्यादा निलंबित निर्दोष कर्मचारियों को बहाल करते हुए दोषी अधिकारियों के विरुद्ध ठोस कार्यवाही नहीं की गई तो 26 मार्च से फार्मर रजिस्ट्री शिविरों में समस्त ऑनलाइन कार्यों का बहिष्कार किया जाएगा।

महासंघ के महामंत्री महावीर सिहाग ने बताया कि प्रदेश के कर्मचारियों के इतिहास में पहली बार किसी विभाग में इतनी बड़ी संख्या में बिना किसी कारण निर्दोष कर्मचारियों के विरुद्ध इस प्रकार निलंबन जैसी दमनात्मक कार्यवाहियां की गई है। प्रदेश के लाखों कर्मचारी खुद के मोबाइल एवं खुद के पैसे से नेट रिचार्ज करते हुए शासन एवं सरकार का पूरी तल्लीनता से कार्य कर रहे हैं। यहां तक कि गत एक वर्ष में अधिकांश कर्मचारी-अधिकारी राजकीय अवकाश को भी कार्य कर रहे हैं। इसके बावजूद भी किसी विभाग के एक उच्च अधिकारी द्वारा कर्मचारियों व अधिकारियों को काम नहीं करने वाला बताते हुए ऐसी कार्यवाहियां करने के कारण प्रदेश के कर्मचारियों में आक्रोश व्याप्त है एवं महासंघ आंदोलन को विवश हुआ है। ऐसे में अब यदि जनता के काम प्रभावित होंगे तो उसकी समस्त जिम्मेदारी शासन एवं सरकार की होगी।

स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं आगे बढ़ने की भावना से कार्य करें : राज्यपाल

- राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कोटा में जिला स्तरीय अधिकारियों से संवाद किया
- 'सभी गांवों में सभी परिवारों तक व्यक्तिगत शौचालय की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए'

कोटा, (निसं)। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं आगे बढ़ने की भावना से कार्य करें और स्वयं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएं। उन्होंने महिला स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए। राज्यपाल सोमवार को जिला परिषद सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ संवाद के दौरान राज्य व केंद्र प्रवर्तित योजनाओं एवं कार्यक्रमों की प्रगति की समीक्षा कर रहे थे।

कोटा में राज्यपाल ने जिला स्तरीय अधिकारियों से संवाद कर निर्देश दिए।

राजीविका के तहत महिला स्वयं सहायता समूहों को आगे बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं खेती, पशुपालन एवं सब्जी उत्पादन जैसे कार्यों में जुटी हुई हैं। उन्होंने स्वयं सहायता समूहों को गोबर से खाद बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए ताकि खेतों में अधिक से अधिक देशी खाद का उपयोग किया जा सके। उन्होंने कहा कि राजीविका के तहत महिलाओं को विभिन्न ऋण योजनाओं से लाभान्वित करें और महिला सशक्तिकरण की दिशा में ऋण योजनाओं का बेहतर उपयोग किया जाए।

राज्यपाल ने योजनाओं एवं कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल देते हुए इनका लाभ आमजन तक प्रभावी रूप से पहुंचाने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। राज्यपाल बागड़े ने महात्मा गांधी नरेगा योजना के तहत जॉब कार्ड एवं श्रमिक नियोजन, अमृत सरोवर निर्माण, पशु आश्रय स्थल निर्माण आदि के बारे में जानकारी ली। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि सभी गांवों में सभी परिवारों तक व्यक्तिगत शौचालय की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की समीक्षा करते हुए उन्होंने गांवों को पक्के रास्तों से जोड़ने के निर्देश दिए। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना की समीक्षा करते हुए राज्यपाल ने कहा कि किसानों को मृदा संबंधी जांच के लिए लैब में सैंपल लाने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे उन्हें अपने खेत की मिट्टी के बारे में अधिक जानकारी होगी और उसके अनुसार फसलों का उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी।

उन्होंने पीएम सूर्यघर योजना का लाभ उठाने के लिए किसानों एवं आमजन को प्रेरित करने तथा पीएम कुसुम योजना में अधिकतम सौर उर्जा संयत्र स्थापित करने के निर्देश दिए ताकि किसानों को इसका अधिकाधिक लाभ मिले। उन्होंने किसानों को उनकी फसल को खरीद केन्द्रों पर विक्रय करने के लिए प्रेरित करने, जल जीवन मिशन में सभी गांवों में पेयजल कनेक्टिविटी सुनिश्चित करते हुए लंबित जल कनेक्शन तय अवधि में पूरे करने के निर्देश दिऐं। बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, स्वामित्व योजना, सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय बागवानी मिशन, स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना सहित अन्य योजनाओं की समीक्षा की गई। बैठक में जिला कलेक्टर डॉ. रविन्द्र गोस्वामी, पुलिस अधीक्षक शहर डॉ. अमृता दुहन, ग्रामीण सुजीत शंकर, केडीए आयुक्त ऋषभ मंडल, जिला परिषद सीईओ राजपाल सिंह, एडीएम सीलिंग कृष्णा शुक्ला सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

इससे पहले राज्यपाल का जिला परिषद पहुंचने पर संभागीय आयुक्त राजेन्द्र सिंह शेखावत, जिला कलेक्टर डॉ.रविन्द्र गोस्वामी एवं पुलिस अधीक्षक शहर डॉ.अमृता दुहन एवं ग्रामीणी सुजीत शंकर ने स्वागत किया। इस अवसर पर राज्यपाल को गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया।

सार-समाचार

कोटा-बूंदी दुग्ध डेयरी ने उपलब्ध करवाई निःशुल्क बीएमसी की सौगात

कोटा, (निसं)। कोटा सरस डेयरी से जुड़ी समितियों के प्रोत्साहन व उनकी उन्नति के लिए कोटा-बूंदी दूध उत्पादक संघ सदैव प्रत्यनशील रहता है। समितियों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी योजनाओं और संघ के माध्यम से विभिन्न योजनाओं का लाभ दिलाया जाता है। यह बात कोटा-बूंदी दूध उत्पादक संघ के अध्यक्ष चैन सिंह राठौड़ ने भूरा का झोपड़ा व मालियों का बरड़ा दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति निःशुल्क बल्क मिल्क कूलर की उद्घाटन समारोह में कही। राठौड़ इस अवसर पर ग्राम सरसपुरिया, मालियों का बरड़ा, भूरा का झोपड़ा, सलावलिया, रघुनाथपुरा, रामपुरिया दुग्ध उत्पादक समितियों का दौरा किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोटा सरस डेयरी चेयरमैन चौन सिंह राठौड़ रहे। अध्यक्ष चैन सिंह राठौड़ के प्रयासों से निःशुल्क बल्क मिल्क कूलर की सौगात मिली। रामपुरिया समिति में 8 हस्थ चलीत कुटी की मशीन व दो नई बीएमसी खोलना की घोषणा की। सहकारी गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना-मुख्य अतिथ अध्यक्ष चैनसिंह राठौड़ ने पशुपालकों को राजस्थान सहकारी गोपाल क्रेडिट कार्ड ऋण योजना" से किसान परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान प्राप्त करने की अपील की। उन्होने बताया कि योजना के तहत किसानों को एक लाख रुपये तक का अल्पकालीन ब्याज मुक्त ऋण दिया जाएगा, जिसकी अवधि एक वर्ष की होगी। एमडी दिलखुश मीणा ने सरस के साथी बन कर शुद्ध दुग्ध समय पर उपलब्ध करवाने की बात मंच से कही और पशुपालकों की योजनाओं से अवगत भी करवाया।

रंग भरो प्रतियोगिता आयोजित

कोटा, (निसं)। हेमू कालानी जन्म दिवस पर विज्ञान नगर स्थित झूलेलाल मंदिर में पूज्य सिंधी पंचायत समिति विज्ञान नगर कोटा और विश्व सिंधी सेवा संगम कोटा चैप्टर की ओर से हेमू कॉलोनी के चित्र में रंग भरो प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 135 ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता, दो आयु वर्गों में हुई, प्रथम वर्ग 3 से 8 वर्ष की उम्र का और दूसरा वर्ग 9 से 12 वर्ष तक की उम्र के बच्चों का थी । 13सवश्रेष्ठ, विजेताओं को विश्व सिंधी सेवा संगम कोटा चैप्टर की ओर से ईनाम दिए गए। निर्णायक के रूप में निरंजन महबूबाणी और किशन रतनानी की सेवाएं मिली। इससे पूर्व विश्व सिंधी सेवा संगम कोटा चैप्टर के अध्यक्ष प्रेम भाटिया, उपाधक्ष रमेश आहूजा, निदेशक किशन रतनानी, निदेशक विमल परियनी, बसंत वलेचा, सिंधी पंचायत समिति विज्ञान नगर कोटा महेश रूपचंदानी, संगठन मंत्री शंकर अंबवानी और महिला समिति अध्यक्ष पायल वीरवानी, समिति के संरक्षक विनोद अजवानी और अध्यक्ष सुंदर दास दूलवानी ने दीप प्रज्ज्वलित किया। जिन विजेताओं को पुरुस्कार दिये गये वो जूनियर ग्रुप प्रथम रिविका कृपलानी, द्वितीय प्रज्ञान, तृतीय खुशी देवानी तीन सांत्वना नित्या रंगवानी, लक्षिता कुकरेजा और ऋतिक कोदवानी, सीनियर ग्रुप में पहला पुरस्कार दृष्टि साहित्य, एक और प्रथम पुरस्कार दिशा चावलानी, दो द्वितीय पुरस्कार हर्षित चौथवानी और देवांश थदानी, दो तृतीय पुरस्कार भव्या छेतीजा और मुस्कान जेठमलानी और एक सांत्वना पुरस्कार राधिका जगवानी थे।

मंत्री दिलावर के भतीजे की सड़क दुर्घटना में मौत

कोटा, (निसं)। राजस्थान के शिक्षा एवं पंचायत राज मंत्री मदन दिलावर के भतीजे भंवरलाल दिलावर की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। घटना बारां जिले के अरड़ांद गांव के पास हुई। भंवरलाल दिलावर बाईक से जा रहे थे तभी अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। हादसे में गंभीर रूप से घायल होने के बाद उन्हें बारां अस्पताल ले जाया गया जहां ईलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। अटरू के पुलिस उपअधीक्षक पुष्पेंद्र सिंह का कहना है कि घटना के बाद बाईक को टक्कर मारने वाला अज्ञात वाहन फरार हो गया। पुलिस ने वाहन की तलाश और घटना की जांच शुरू कर दी है। पुष्पेंद्र सिंह ने बताया कि यह दुर्घटना दोपहर करीब 12 बजे नेशनल बारां-अटरू रोड़ पर अरड़ांद गांव के पास हुई है। बारां अस्पताल में पोस्टमार्टम और अन्य औपचारिकताएं पूरी करने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर पुलिस उचित कार्रवाई करेगी। मृतक भंवरलाल दिलावर, मंत्री मदन दिलावर के बड़े भाई मूलचंद दिलावर के पुत्र थे। घटना की जानकारी मिलने के बाद मंत्री मदन दिलावर तत्काल अपने गृह जिले बारां लौट गए हैं। भंवरलाल का अंतिम संस्कार उनके पैतृक गांव चरड़ाना में किया जाएगा।

एलन विद्यार्थियों को शानदार सफलता

कोटा, (निसं)। सिल्वरजोन फाउंडेशन द्वारा आयोजित इंटरनेशनल ओलंपियाड ऑफ मैथमेटिक्स (आईओएम) द्वितीय स्तर के परिणामों में एलन प्रीनर्चर एंड करियर फाउंडेशन (पीएनसीएफ) डिविजन कोटा के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन कर अपनी शैक्षणिक श्रेष्ठता को सिद्ध किया है। इस परीक्षा में संस्था के छात्र अभिनीत सरकार ने ऑल इंडिया रैंक 1 प्राप्त कर लेवल 3 के लिए क्वालिफाई किया है। एलन वाइस प्रेसिडेंट एवं पीएनसीएफ हेड अमित गुप्ता ने बताया कि हमारे कुल 64 विद्यार्थियों ने राज्य स्तर पर तथा 38 विद्यार्थियों ने जोनल स्तर पर शीर्ष 100 स्थानों में अपना स्थान अर्जित किया है। आईओएम एक प्रतिष्ठित प्रतियोगिता है, जो गणित विषय में विद्यार्थियों की तार्किक और विश्लेषणात्मक क्षमताओं का परीक्षण करती है। इसके द्वितीय चरण परिणाम में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी कक्षा वर्ग में शीर्ष रैंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी ही तृतीय चरण के लिए योग्य घोषित किये जाते हैं। तृतीय चरण में उच्च स्तरीय गणितीय समस्याएं होती हैं और सफल छात्र अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त करते हैं।

राजीव दत्ता का स्वागत किया

कोटा, (निसं)। राजस्थान कुश्ती संघ के अध्यक्ष एवं लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के ओएसडी राजीव दत्ता का गुमानपुरा स्थित उनके कार्यालय पर श्री बजरंग व्यायामशाला महावीर नगर प्रथम के अध्यक्ष माधाराम चौधरी व कोटा के पूर्व अंतर्राष्ट्रीय पहलवान व अंतर्राष्ट्रीय रेफरी रविंद्र कुमार सहित अन्य पहलवानो ने स्वागत सम्मान किया। अंतरराष्ट्रीय पहलवान रविन्द्र कुमार ने बताया कि इस दौरान सभी पहलवानों ने राजीव दत्ता को माला पहनाई व गुलदस्ते भेंट कर स्वागत सम्मान किया। इस मौके पर एन.आई.एस. कोच अमित यादव, चमन सिंह, राष्ट्रीय पहलवान अविनाश चौधरी, गुंजन शर्मा, नितेश चौहान, राकेश मीणा, सुरेंद्र प्रजापत, विष्णु प्रजापत, इंद्रजीत शर्मा सहित अन्य पहलवान उपस्थित रहे।

लापता युवक का शव मिला

कोटा, (निसं)। दो दिन पहले लापता हुऐ युवक का शव सोमवार को दायीं मुख्य नहर में थेकड़ा के समीप मिला। नगर निगम गोताखोर विष्णु श्रृंगी ने बताया कि शनिवार को रामपुरा कोतवाली पुलिस द्वारा सुचना मिली की प्रेस क्लब के समीप तारामल आयरन वर्क्स पर काम करने वाला एक कर्मचारी नहर में गिर गया है। विष्णु श्रृंगी ने बताया कि सूचना पर गोताखोर चंगेज खान के नेतृत्व में रेस्क्यू टीम दायीं मुख्य नहर में मोटर बोट की सहायता से तलाशी अभियान चलाया गया। उन्होंने बताया कि अभियान के तहत सोमवार शाम को युवक का शव दायीं मुख्य नहर थेकड़ा पुलिया के पास बरामद हुआ। मृतक के शव को पुलिस को सौंपा गया। मृतक की पहचान रामपुरा कोतवाली निवासी मोहम्मद समीर के रूप में हुई है। पुलिस ने मृतक के शव को एमबीएस अस्पताल के पोस्टमार्टम रूम में रखवा दिया।

अनुरक्षण कार्य के चलते दो दिन छबड़ा-भुलोन के बीच रेल फाटक बंद रहेगा

कोटा, (निसं)। मंडल के छबड़ा गुगोर-भुलोन के मध्य किलोमीटर संख्या 127/1-2 पर स्थित मानवयुक्त समपार फाटक संख्या 72 दिनांक 25 मार्च से 27 मार्च तक अनुरक्षण कार्य हेतु बन्द रहेगा। रेल पथ का मेन्टेनेन्स कार्य ट्रेन संचालन हेतु अति आवश्यक है एवं यह समपार फाटक दिनांक 25 मार्च शाम 18.00 बजे से दिनांक 27 मार्च सुबह 08.00 बजे दो दिनों तक सड़क यातायात के लिए बंद रहेगा। इस गेट से निकलने वाले बड़े यातायात वाहन समपार फाटक संख्या 71 एवं चचोडा पुलिया संख्या 112 से गुजरेंगें। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ जैन ने बताया कि आमजनमानस को होने वाली असुविधा के लिए खेद है लेकिन रेलपथ का अनुरक्षण कार्य किया जाना आवश्यक है।

अनाधिकृत यात्रियों पर रेलवे ने कार्यवाही की

कोटा, (निसं)। मंडल में रेल मदद पोर्टल 139 पर प्राप्त शिकायतों का तत्परता से निराकरण चौबीस घंटे किया जा रहा है। जिसके लिए कोटा नियंत्रण कार्यालय में वार रूम में विभिन्न विभागों की टीम लगातार कार्यरत है। इसी कड़ी में रेल मदद पर रविवार गाड़ी संख्या 12956 जयपुर-मुम्बई सेन्ट्रल सुपरफास्ट के विकलांग कोच में अनाधिकृत रूप से कई यात्रियों के यात्रा करने की सूचना मिली।

'भाजपा सरकार टारगेट बनाकर चुने हुए जनप्रतिनिधियों को हटा रही है'

- 'भाजपा सरकार जनमत एवं लोकतंत्र की हत्या कर रही है'
- 'भाजपा सरकार हाईकोर्ट के आदेशों की अवेहलना कर गुमराह कर रही है'

कोटा, (निसं)। भाजपा सरकार के इशारे पर कांग्रेस के चुने हुए जनप्रतिनिधियों को टारगेट बनाकर हटाने का आरोप लगाते हुए सोमवार को शहर एवं देहात जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से जिले के कार्यकर्ता नयापुरा सर्किट हाऊस के बाहर से एकत्रित होकर रवाना हुए। कलेक्टरी चौराहे पर शहर एवं देहात अध्यक्ष रविन्द्र त्यागी भानू प्रताप सिंह तथा लाडपुरा प्रधान रहे नईमुद्दीन गुड्डू सहित कांग्रेसजनों ने संविधान निर्माता भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति पर माल्यार्पण कर जिला कलेक्टर कार्यालय के बाहर भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी की गई।

सरकार के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर के पुतले का दहन कर नारेबाजी की तथा सरकार को जमकर कोसा। इसके बाद कांग्रेसजनों के साथ लाडपुरा पंचायत समिति में लाडपुरा प्रधान रहे नईमुद्दीन गुड्डू हाईकोर्ट से बहाल हुए अपना पदभार ग्रहण करने जा रहे थे। गेट के बाहर रोक दिया गया सीईओ द्वारा यह कहा गया सरकार को पदभार ग्रहण करने के लिए कागज भेजा है वहां से जो भी सरकार हाईकोर्ट के आदेश पर अपना जवाब भेजेगी उसके आधार पर नियमानुसार कार्यवाही की जावेंगी और आपको अवगत करा दिया जायेगा।

इस मौके पर पूर्व मंत्री रहे भरत सिंह ने आरोप लगाया कि में लाडपुरा पंचायत में अंदर गया वही पर पुलिस ने अंदर रोके रखा था बाद में मुझे छोड़ा इससे सरकार की कमजोरी, हिटलरशाही जाहिर होती है।

कोटा में कांग्रेस के द्वारा प्रदर्शन किया गया।

इस मौके पर शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष रविन्द्र त्यागी ने कहा कि भाजपा सरकार जनमत एवं लोकतंत्र की हत्या कर रही है हाईकोर्ट के निर्णय को दर किनार कर रही है। देहात कांग्रेस अध्यक्ष भानूप्रताप सिंह ने भाजपा सरकार खुलेआम लोकतंत्र की हत्या कर रही है। चुने हुए जनप्रतिनिधियों को अलोकतांत्रिक तरीके से हटा रही है। लाड़पुरा प्रधान रहे नईमुद्दीन गुडू ने कहा कि भाजपा सरकार हाईकोर्ट के आदेशों की अवहेलना कर रही है कोर्ट के आदेशों को नही माना जा रहा। चुने हुए जनप्रतिनिधियों का अपमान किया जा रहा है। जनता के हितों के लिए संघर्ष करते रहेंगे। प्रदर्शन में मुख्यरूप से के.पाटन विद्यायक सीएल प्रेमी, पूर्व महिला कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राखी गौतम, उपमहापौर पवन मीणा, महासचिव डॉ विजय सोनी, रामेश्वर सुवालका, हिमांशु शर्मा, महामंत्री विपिन बरथूनीया, पूर्व चेयरमैन आइना महक, अजय गुप्ता, हंसराज गोस्वामी, मंजू चौधरी, अब्दुल हमीद गोड़, सरपंच मोइनुद्दीन, विजय गुप्ता, ब्लॉक अध्यक्ष शकील मिर्जा ब्लॉक अध्यक्ष अनिरुद्ध मीणा पूर्व अप जिला प्रमुख मनोज शर्मा, ब्लॉक अध्यक्ष गोविंद भड़क, पूर्व उप-प्रधान गजराज सिंह, सरपंच मोईनुद्दीन, पीसीसी सचिव मंजूर तंवर आदि मौजूद थे।

पूर्व विधायक भरत सिंह ने लगाया कमरे में बंद करने का आरोपः- पूर्व मंत्री भारत सिंह ने कौन है प्रदर्शन के दौरान बीडीओ कार्यालय में बंद करने का आरोप लगाया है। भारत सिंह ने कहा कि वे प्रदर्शन में शामिल होने के लिए लाड़पुरा पंचायत समिति कार्यालय पहुंचे थे। इस दौरान वे बीडीओ कर्यालय में बैठे हुए थे तो उन्हें प्रदर्शन में शामिल होने के लिए बाहर नहीं जाने दिया गया।

10-15 मिनट तक उन्हें बीडीओ कार्यालय में बंद रखा गया। उन्होंने कहा कि कोटा जिले की लाड़पुरा पंचायत समिति में बीडीओ व कार्यालय में पुलिसकर्मी द्वारा गुंडागर्दी करते हुए जिस प्रकार कार्यालय में बंद किया, सरकार के लिए से शर्मनाक बात नहीं हो सकती। सरकार उच्च न्यायालय का भी आदेश नहीं मान रही है। पूरे राज्य में जंगल राज हो गया है। भाजपा सरकार पंचायत राज मंत्री मदन दिलावर ने हमेशा ही गुंडागर्दी की है।

जेके फैक्ट्री के मजदूरों का धरना जारी

कोटा, (निसं)। बकाया वेतन का भुगतान करने ओर फैक्ट्री को चालू कराने कि मांग को लेकर 35वें दिन भी श्रमिकों का धरना जारी रहा। जेके फैक्ट्री के श्रमिक 18 फरवरी से कोटा कलेक्ट्रेट के सामने सरकार से वर्ष 2023 मे सुप्रीम कोर्ट द्वारा मजदूरों के पक्ष मे दिए फैसले के आदेश को लागू कराने कि मांग को लेकर धरने पर बैठने को मजबूर है। लेकिन 35 दिन बीत जाने के बाद भी मजदूर की आवाज कोई नहीं सुन रहा। मजदूर नेताओं ने कहा कि सभी मजदूरों को एकजुट होकर धरने को लगातार मजबूत करते रहना है निश्चिय ही धरने की जीत होंगी।

खोया पाया

भगवती खंडेलवाल पत्नी श्री अनिल शर्मा 2-G-9 महावीर नगर तृतीय कोटा का नियमितीकरण, निरस्तीकरण व अदेय प्रमाण पत्र गुम हो गया है, किसी को मिलने पर सूचित करें।

एलबीएस शिक्षा समूह के 34वें स्थापना दिवस पर वार्षिकोत्सव का आयोजन

कोटा, (निसं)। एलबीएस ग्रुप के चेयरमेन कुलदीप माथुर ने बताया की संस्था के 34वें स्थापना दिवस के अवसर पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथि वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ.कैलाश सोडाणी, रेडक्रॉस सोसायटी कोटा के प्रदेश अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला, राजस्थान टेक्निकल यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. संतोष कुमार सिंह, कोटा जिला शिक्षा अधिकारी के.के. शर्मा के द्वारा मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने सभी को संबोधित करते हुए शिक्षा के समग्र विकास में ऐसे आयोजनों के महत्व को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा युवाओं के विकास में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। इन दो दिवसीय कार्यक्रम में विद्यालय एवं महाविद्यालय सहित संस्था द्वारा दिव्यांग बच्चों के लिए चलाऐ जा रहे निःशुल्क विशेष विद्यालय के सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया। जिनमें नृत्य, नाटक और संगीत ने सभी का मन मोह लिया।

विद्यार्थियों द्वारा पुलिस एक्ट, जिनी एक्ट, कृष्ण लीला, शिव साधना, कृष्ण अवतार, हाडी रानी, किसान एक्ट जैसे रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम मे उपस्थित अतिथियों का संस्था के डायरेक्टर सुदर्शन माथुर द्वारा माला, साफा, मोमेंटो देकर स्वागत अभिनंदन किया। संस्था चेयरमेन कुलदीप माथुर ने सभी उपस्थित अतिथियों प्रतिभागियों और आयोजन टीम का धन्यवाद देते हुए इस कार्यक्रम को सफल बनाने में उनके योगदान की सराहना की। उन्होंने छात्रों को जीवन के हर क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया और अभिभावकों के सहयोग के लिए विशेष रूप से आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को संस्था की ओर से पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

कोटा में एलबीएस का वार्षिक उत्सव संपन्न हुआ।

उपरोक्त कार्यक्रम एलबीएस शिक्षा समूह के रानपुर स्थित कैम्पस में लगभग 3500 छात्र-छात्राओं एवं आमंत्रित अभिभावकगण अतिथिगण एवं विद्यालय के शिक्षकगणों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान संस्था की सचिव उर्मिला माथुर, सीईओ ओपी माथुर, योगेंद्र माथुर, उपेन्द्र माथुर, डॉ.शिल्पा माथुर, डॉ.प्रिया शुक्ला, डायरेक्टर सुदर्शन माथुर, दीपक खत्री, अनिता राय, रिषभ कुमार, आयूष टहलयानी, चेतन दूबे, हिमांशु शर्मा, दीपशिखा नामदेव, शिवानी भटनागर, सुरेन्द्र नागर, नेहा माथुर, नीतू कुमावत, जितेन्द्र शर्मा, विजेन्द्र सिंह, दीनदयाल नागर, अनिल नामदेव और अन्य सदस्य शामिल थे।

कोटा टूरिज्म, विजिट कोटा, यादगार कोटा का विमोचन

- सेलिब्रिटी फिल्म अभिनेत्री मनारा चौपड़ा भी कार्यक्रम में हुई शामिल

कोटा, (निसं)। हाड़ौती में पर्यटन, उद्योग, शिक्षा, मेडिकल व प्रमुख व्यापारिक केंद्र बनाने एवं नई दिशा देने के लिए होटल फेडरेशन ऑफ़ राजस्थान कोटा डिवीजन तथा अर्बन हेराल्ड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित भव्य कार्यक्रम में पुस्तक" कोटा टूरिज्म-विजिट कोटा-यादगार कोटा" द्वितीय संस्करण का विमोचन अतिरिक्त जिला कलेक्टर (सीलिंग) कृष्णा शुक्ला, होटल फेडरेशन ऑफ़ राजस्थान कोटा डिवीजन के अध्यक्ष अशोक माहेश्वरी, जिला उद्योग केंद्र के महाप्रबंधक हरिमोहन शर्मा, पर्यटन विभाग के उपनिदेशक विकास पांड्या, कोटा व्यापार महासंघ के अध्यक्ष क्रांति जैन, भाटिया एंड कंपनी के निदेशक प्रेम जे भाटिया, मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल डॉ.विजय सरदाना, होटल फेडरेशन ऑफ राजस्थान कोटा डिवीजन के महासचिव संदीप पाडिया, कोषाध्यक्ष अंकुर गुप्ता, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन जिला कोटा के महामंत्री व महाराजा अग्रसेन सेवा समिति सुभाषनगर अनंतपुरा के अध्यक्ष रमेशचन्द्र गोयल, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के देवेंद्र सिंह चौहान, प्रतीक गोयल सहित पर्यटन, शिक्षा उद्योग, मेडिकल से जुड़े हुए व्यवसायियों की उपस्थिति में बूंदी रोड स्थित माहेश्वरी रिसोर्ट में आयोजित भव्य कार्यक्रम में किया गया। कार्यक्रम का संयोजन ऋषभ भार्गव ने किया। कार्यक्रम में शामिल हुई सेलिब्रिटी फिल्म अभिनेत्री मनारा चौपड़ा विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। इस पुस्तक का लेखन एवं संपादन राजस्थान लेखा सेवा के सेवा निवृत अधिकारी एवं यूआईटी के पूर्व राजस्व सलाहकार परमानन्द गोयल द्वारा किया गया है। पुस्तक के द्वितीय संस्करण के विमोचन के अवसर पर गोयल द्वारा बताया गया कि पुस्तक में कई जानकारियों को अद्यतन करते हुए नवीन सामग्री का भी समावेश किया गया है।

कोटा में परमानंद गोयल द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन हुआ।

भारतीय राष्ट्रीय किसान महासभा का होली मिलन समारोह सम्पन्न

कोटा, (निसं)। भारतीय राष्ट्रीय किसान महासभा का होली मिलन समारोह सोगरिया मे सम्पन्न हुआ इस अवसर पर किसानों एवं कार्यकर्ताओं ने भारतीय राष्ट्रीय किसान महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज दुबे का स्वागत एवं सम्मान किया गया।

इस अवसर पर भारतीय राष्ट्रीय किसान महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज दुबे ने किसानों से एकजुट होने का आव्हान करते हुए कहा की संगठित हुए बिना किसानों का भला नहीं होगा किसानों को एकजुट होकर किसान विरोधी ताकतों का जमकर मुकाबला करना होगा। देश के 62करोड़ किसानों को अपनी ताकत समझनी होंगी जिस दिन किसान एक होकर मजबूत हो गए उस दिन सरकारों को किसानों के हित मे सोचने पर मजबूर होना ही पड़ेगा।

मनोज दुबे ने कहा कि एमएसपी की कानूनी गारंटी, किसानों की सम्पूर्ण कर्जमाफी, डीएपी खाद एवं यूरिया की भारी किल्लत, किसानों को पर्याप्त मात्रा मे बिजली पानी आदी कई बड़े मुद्दे हैं। जिस पर अतिशीघ्र बड़ा आंदोलन शुरू किया जाएगा। सरसों व चने की एमएसपी पर खरीद मे देरी से किसानों को भारी नुकसान हो रहा है। मंडियो मे सरसों व चने की बम्पर आवक हो रही है। लेकिन एमएसपी पर खरीद शुरू नहीं होने के कारण किसान कम दाम पर अपनी उपज बेचने को मजबूर है।

इस अवसर पर भारतीय राष्ट्रीय किसान महासभा की महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्ष मंजू चौधरी, वरिष्ठ नेता प्रमोद त्रिपाठी, सभागीय अध्यक्ष राकेश कुमावत, हमीद गौड़, अंशु तिवारी, अमित सूद, पूर्व उप सरपंच प्रीतम शर्मा, शिवचरण शर्मा, मो. रफीक मामा, तेजपाल सिंह भोला, उमा शंकर नागर, हरभजन सिंह, जावेद हुसैन, राम कैलाश मेघवाल, छोटू लाल मीणा, ओम सोनी, नरेश मेघवाल, प्रकाश चन्द्र सिंह, आरएस पांडेय, महावीर नागर, सुनील पटेल, बबलू सुमन, राजू माटोलिया, राकेश जोशी, प्रवेश वशिष्ठ,रामावतार बागड़ी, रियासत अली, कमलेश नागर, दिग्विजय सिंह, पदम सिंह, लेखराम चोबदार, राजेंद्र नागर, मनोज गौतम, सत्तार, मुकेश मीणा,चन्द्र प्रकाश नागर, इमरोज खान, भानुप्रिया, सुमन बागड़ी, सायरा, रेखा सोगरा, विमलेश चौधरी, गब्बर, कृष्ण मुरारी, चंद्रशेखर बातकी सहित सैकड़ो कार्यकर्त्ता मौजूद रहे।

कोटा में भारतीय राष्ट्रीय किसान महासभा का होली मिलन समारोह आयोजित हुआ है।

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ11 विक्रय/2025/1280 दिनांकः-24.3.25

नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना

नगर विकास न्यास कोटा द्वारा आवास संख्या 743 कार्नर विवेकानन्द नगर आवासीय योजना में हस्तान्तरण पत्र क्रमांक 811 दिनांक 19.03.2012 को श्री संजय कुमार पुत्र श्री रामचन्द्र जांगिड़ के नाम हस्तान्तरण किया गया था। श्री संजय कुमार पुत्र श्री रामचन्द्र जांगिड़ द्वारा उक्त आवास का जर्ये मुख्तारआम श्री भैरुलाल राठौर पुत्र श्री जगन्नाथ राठौर द्वारा जर्ये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 16.06.2015 को श्री तुलसीराम नागर पुत्र श्री कन्हैयालाल को विक्रय कर दिया गया है। अतः श्री तुलसीराम नागर पुत्र श्री कन्हैयालाल द्वारा उक्त आवास का स्वामित्व अपने नाम से नामहस्तान्तरण करने हेतु न्यास में आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः जरिये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त आवास संख्या 743 कार्नर विवेकानन्द नगर आवासीय योजना का नाम हस्तान्तरण श्री तुलसीराम नागर पुत्र श्री कन्हैयालाल के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी।

उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण कोटा

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ11 विक्रय/2025/1283 दिनांकः-24.3.25

नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना

नगर विकास न्यास कोटा द्वारा भूखंड संख्या 47 कार्नर श्रीनाथपुरम-ए व्यावसायिक योजना में आवंटन पत्र क्रमांक 474 दिनांक 09.01.2023 को श्री विरेन्द्र कुमार गुप्ता पुत्र श्री बद्री प्रसाद गुप्ता के नाम आवंटन किया गया था। श्री विरेन्द्र कुमार गुप्ता पुत्र श्री बद्री प्रसाद गुप्ता द्वारा उक्त भूखंड का जर्ये मुख्तारआम श्री मुकेश योगी पुत्र श्री रामगोपाल योगी द्वारा जर्ये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 20.09.2024 को श्री विकास अग्रवाल पुत्र श्री श्याम सुंदर अग्रवाल एवं श्री पंकज अग्रवाल पुत्र श्री श्याम सुंदर अग्रवाल को विक्रय कर दिया गया है। अतः श्री विकास अग्रवाल पुत्र श्री श्याम सुंदर अग्रवाल एवं श्री पंकज अग्रवाल पुत्र श्री श्याम सुंदर अग्रवाल द्वारा उक्त भूखंड का स्वामित्व अपने नाम से नामहस्तान्तरण करने हेतु न्यास में आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः जरिये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त भूखंड संख्या 47 कार्नर श्रीनाथपुरम-ए व्यावसायिक योजना का नाम हस्तान्तरण श्री विकास अग्रवाल पुत्र श्री श्याम सुंदर अग्रवाल एवं श्री पंकज अग्रवाल पुत्र श्री श्याम सुंदर अग्रवाल के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी।

उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण कोटा

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ11 विक्रय/2025/1282 दिनांकः-24.3.25

नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना

नगर विकास न्यास कोटा द्वारा भूखंड संख्या एएच-211 आनन्दपुरा आवासीय योजना में आवंटन पत्र क्रमांक 41 दिनांक 22.07.1992 को श्री शीतल दास पुत्र श्री देवन दास के नाम आवंटन किया गया था। श्री शीतल दास पुत्र श्री देवन दास द्वारा उक्त भूखंड का जर्ये मुख्तारआम श्री ओम प्रकाश गोयल पुत्र श्री प्रभुलाल गोयल द्वारा जर्ये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 06.06.2018 को श्री बृजेश कुमार शर्मा पुत्र श्री रामकिशन शर्मा को विक्रय कर दिया गया है। अतः श्री बृजेश कुमार शर्मा पुत्र श्री रामकिशन शर्मा द्वारा उक्त भूखंड का स्वामित्व अपने नाम से नामहस्तान्तरण करने हेतु न्यास में आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः जरिये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त भूखंड संख्या एएच-211 आनन्दपुरा आवासीय योजना का नाम हस्तान्तरण श्री बृजेश कुमार शर्मा पुत्र श्री रामकिशन शर्मा के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी।

उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण कोटा

कार्यालय कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ-15/कृ.भू.रू./2025/3781 **विज्ञप्ति** दिनांकः-21.3.2025

सर्व साधारण को जर्ये विज्ञप्ति सूचित किया जाता है कि ग्राम रामपुरा में स्थित कृषि भूमि योजना केसर बाग भूखंड संख्या 120 खसरा नं. 615 आवेदक/आवेदिका श्री बशीरुद्दीन पुत्र स्व. श्री युसुफ अली निवासी 1 खुशबु किराना के सामने आदर्श नगर साजीदेहडा कोटा राज. द्वारा ऑनलाईन नाम हस्तान्तरण हेतु प्राधिकरण कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। उक्त भूखंड का पट्टा क्रमांक 546 दिनांक 21.12.2015 को श्री मुकुट बिहारी नागर पुत्र श्री मथुरा लाल के पक्ष में जारी किया गया था। पट्टाधारी द्वारा उक्त भूखंड का बैचान जर्ये रजि. विक्रय पत्र दिनांक 15.07.2022 को जर्ये मुख्तारआम अब्दुल फरीद पुत्र श्री अब्दुल रशीद द्वारा आवेदक के पक्ष में किया गया है।

अतः श्री बशीरुद्दीन पुत्र स्व. श्री युसुफ अली के पक्ष में नाम हस्तान्तरण जारी किये जाने में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर 7 योम कार्यालय में उपस्थित होकर अथवा लिखित में अद्योहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करें। मियाद गुजर जाने के बाद आपत्ति मान्य नही होगी।

उपसचिव कोटा विकास प्राधिकरण

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-65 **नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना** दिनांकः-24.3.25

नगर विकास न्यास कोटा की विनोबा भावे नगर योजना के भूखंड/आवास संख्या 334 कार्नर का आवंटन/हस्तान्तरण/रजि. न्यास के पत्र दिनांक 28.12.2022 को श्री महावीर प्रसाद सिंघल पुत्र श्री राम कुमार सिंघल को किया गया था। आवंटी द्वारा उक्त भूखंड/आवास का जर्ये मुख्तारआम श्री हरीश सुवालका पुत्र श्री प्रदीप कुमार द्वारा जर्ये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 25.02.2025 को श्रीमती मोहिनी पत्नी श्री धन्नालाल को विक्रय कर दिया गया है। क्रेता द्वारा उक्त भूखंड/आवास का अपने नामहस्तान्तरण करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः जरिये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त भूखण्ड/आवास संख्या 334 कार्नर योजना विनोबा भावे नगर का नाम हस्तान्तरण श्रीमती मोहिनी पत्नी श्री धन्नालाल के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी।

उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ11 विक्रय/2025/1276 दिनांकः-24.03.2025

नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना

नगर विकास न्यास कोटा द्वारा आवास संख्या 1257 बसंत विहार केशवपुरा-9 आवासीय योजना में आवंटन पत्र क्रमांक 504 दिनांक 24.11.1984 को श्री कैलाश नारायण जैन पुत्र श्री लक्ष्मी चंद जैन के नाम आवंटन किया गया था। श्री कैलाश नारायण जैन पुत्र श्री लक्ष्मी चंद जैन द्वारा उक्त आवास का जर्ये मुख्तारआम श्री रमेश प्रसाद सिंह पुत्र श्री जगमोहन प्रसाद सिंह द्वारा जर्ये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 05.09.2024 को श्रीमती सुरभि जैन पत्नी श्री रवि कुमार जैन को विक्रय कर दिया गया है। अतः श्रीमती सुरभि जैन पत्नी श्री रवि कुमार जैन द्वारा उक्त भूखंड का स्वामित्व अपने नाम से नामहस्तान्तरण करने हेतु न्यास में आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः जरिये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त आवास संख्या 1257 बसंत विहार केशवपुरा-9 आवासीय योजना का नाम हस्तान्तरण श्रीमती सुरभि जैन पत्नी श्री रवि कुमार जैन के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी।

उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण कोटा

कार्यालय प्रमुख चिकित्सा अधिकारी एवं सदस्य सचिव आरएमआरएस, बून्दी

क्रमांक/निविदा/2025/404 दिनांक-19.03.2025

निविदा सूचना

पं. बृज सुन्दर शर्मा, सामान्य चिकित्सालय बून्दी में सफाई सामग्री क्रय करने हेतु निविदा के माध्यम से मोहरबन्द लिफाफे में आमंत्रित की जाती है। निविदा का UBN NO. MHS2425GSOB05574 है। विस्तृत जानकारी Sppp.raj.nic.in तथा कार्यालय में कार्यालय समय पर देखी जा सकती है।

प्रमुख चिकित्सा अधिकारी एवं सदस्य सचिव आरएमआरएस, बून्दी

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण (राज.)

क्रमांकः-ननिकोद/जोन-द्वितीय/भ.नि.अनु./2025/19411 दिनांकः 24.3.25

स्वामित्व हस्तांतरण बाबत सार्वजनिक विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती किरण बाली पत्नी स्व. श्री गिरिजेश दत्त बाली निवासी आवास संख्या 6-सी-22 महावीर नगर तृतीय कोटा (राज.) ने नगर निगम कोटा दक्षिण में आवेदन प्रस्तुत कर आवास संख्या 6-सी-22 महावीर नगर तृतीय कोटा क्षेत्रफल 90 वर्ग मीटर का स्वामित्व स्वयं के नाम हस्तांतरण करने का निवेदन किया है। आवास संख्या 6-सी-22 महावीर नगर तृतीय कोटा की कन्वेंएन्स एवं परिपिचुअल लीज डीड पंजीयन राजस्थान आवासन मण्डल कोटा द्वारा पत्र क्रमांक उप पंजी. प्र./6574 दिनांक 28.02.1995 को श्री गिरिजेश दत्त बाली पुत्र श्री राम लाल बाली के नाम करवाया गया। श्री गिरिजेश दत्त बाली का देहावसान दिनांक 12.05.2021 को हो जाने के उपरांत श्री गिरिजेश दत्त बाली की विधिक वारिसान श्रीमती दीपिका दत्त पत्नी श्री पवन दत्त पुत्री स्व. श्री गिरिजेश दत्त बाली ने जर्ये नोटेरी मुख्तियारनामा खास दिनांक 18.12.2024 से उक्त आवास में से स्वयं के हक का मुख्तार आम श्री अनमोल बाली पुत्र स्व. श्री गिरिजेश दत्त बाली को नियुक्त कर दिया। श्री अनमोल ने बहैसियत खुद व बहैसियत मुख्तार खास श्रीमती दीपिका दत्त के उक्त आवास में से स्वयं एवं श्रीमती दीपिका दत्त का हक जर्ये रजिस्टर्ड हकत्याग पत्र दिनांक 07.02.2025 से श्रीमती किरण बाली पत्नी स्व. श्री गिरिजेश दत्त बाली के पक्ष में त्याग दिया है। आवेदिका द्वारा प्रस्तुत आवेदन अनुसार नगर निगम कोटा दक्षिण में उक्त आवास का स्वामित्व नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही की जा रही है। उक्त आवास का स्वामित्व नाम हस्तांतरण करने में किसी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को भी उक्त आवास से संबंध रखता है, को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस में अपनी आपत्ति लिखित में उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण कार्यालय में प्रस्तुत करें। बाद मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी।

उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण

खेल जगत

वह जश्न शायद मुंबई के लिए था, शायद चयनकर्ताओं के अध्यक्ष के लिए, शायद रोहित शर्मा के लिए, शायद पूरे भारत के लिए, शायद पूरी दुनिया के लिए वह एक शानदार संतुलित खिलाड़ी है। **– माइकल वॉन**

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान, रोहित शर्मा के लिये बोलते हुए।

आज का खिलाड़ी

इरफान पठान

आईपीएल 2025 के मैच शुरू होने से पहले एक बडा मामला सामने आया है। दरअसल, आईपीएल के इस बड़े टूर्नामेंट से अब 2 साल के लिए इरफान पठान को बाहर कर दिया गया है। इरफान पठान बेहतरीन कमेंटेटर के रूप में इस लीग से जुड़े हुए थे, लेकिन अब 2 साल तक इसमें कमेंट्री नहीं कर पाएंगे। एक रिपोर्ट की माने तो इरफान पठान को भारतीय खिलाड़ियों के खिलाफ कमेंट करने के मामले में बाहर किया गया है। इंडियन प्रीमियर लीग के 18वें सीजन की कमेंटेटर लिस्ट में इरफान पठान का नाम शामिल नहीं है।

क्या आप जानते हैं ?... जिमी जॉर्ज एक भारतीय वॉलीबॉल खिलाड़ी और भारतीय राष्ट्रीय वॉलीबॉल टीम के कप्तान थे। उन्हें अक्सर भारतीय वॉलीबॉल का भगवान कहा जाता है।

बीसीसीआई ने नए सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट का किया ऐलान 16 महिला खिलाड़ियों को मिली जगह

नई दिल्ली, 24 मार्च। बीसीसीआई ने साल 2024-15 के लिए महिला क्रिकेटर्स की नई कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट जारी कर दी है। बीसीसीआई ने इस बार टीम इंडिया की 16 महिला खिलाड़ियों को सलाना कॉन्ट्रैक्ट दिए जाने का ऐलान किया है। बीसीसीआई ने महिला क्रिकेटर्स की सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट को तीन कैटेगरी में बांटा है। 16 में से 3 खिलाड़ियों को ग्रेड ए में रखा है। वहीं, ग्रेड बी में 4 खिलाड़ी अपनी जगह बनाने में कामयाब रही हैं। इनके अलावा 9 खिलाड़ियों को ग्रेड सी में जगह दी गई है। ये कॉन्ट्रैक्ट 1 अक्टूबर, 2024 से 30 सितंबर, 2025 तक के लिए है। बीसीसीआई ने ग्रेड ए में कप्तान हरमनप्रीत के अलावा स्मृति मंधाना और दीप्ति शर्मा को ग्रेड ए कैटेगरी में जगह दी है। वहीं बी ग्रेड में 4 खिलाड़ियों को जगह मिली है। ये 4 खिलाड़ी रेणुका ठाकुर, जेमिमा रोड्रिग्स, ऋचा घोष और शेफाली वर्मा हैं। इनके अलावा यस्तिका भाटिया, राधा यादव, श्रेयंका पाटिल, तितास साधु, अरुंधति रेड्डी, अमनजोत कौर, उमा छेत्री, स्नेह राणा और पूजा वस्त्रकार को ग्रेड सी में रखा गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ग्रेड ए में शामिल हरमनप्रीत कौर, स्मृति मंधाना और दीप्ति शर्मा को 50-50 लाख रुपये मिलेंगे। वहीं रेणुका ठाकुर, जेमिमा रोड्रिग्स,ऋचा घोष और शेफाली वर्मा को 30-30 लाख रुपये दिए जाएंगे। इनके अलावा ग्रेड सी में शामिल सभी 9 खिलाड़ियों को साल के 10-10 लाख रुपये मिलेंगे। पिछले साल भी तीनों ग्रेड के लिए यही रकम दी गई थी।

केएल राहुल और अथिया शेट्टी के घर गूंजी किलकारी, भारतीय क्रिकेटर बने बेटी के पिता

नई दिल्ली, 24 मार्च। टीम इंडिया के विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल पिता बन गए हैं। उनकी पत्नी और बॉलीवुड एक्ट्रेस अथिया शेट्टी ने बेटी को जन्म दिया है। इसकी जानकारी खुद भारतीय बल्लेबाजी ने सोशल मीडिया के जरिए दी है। बता दें कि, राहुल इसी कारण दिल्ली कैपिटल्स का पहला मैच खेलने नहीं आए हैं। इस कपल ने पिछले वर्ष नवंबर में जानकारी दी थी कि आथिया शेट्टी प्रेग्नेंट है। साथ ही टीम इंडिया ने जबसे चैंपियंस ट्रॉफी 2025 जीती उसकेबाद से ही कयास लगाए जाने लगे थे कि राहुल, आईपीएल के शुरुआती मुकाबलों को मिस कर सकते हैं। कमेंट सेक्शन में उनके लिए बधाइयों का तांता लगा हुआ है। बॉलीवुड से लेकर क्रिकेट जगत के तमाम हस्तियां उन्हें बधाई दे रहे हैं। केएल राहुल और आथिया शेट्टी ने जनवरी 2023 में शादी रचाई थी। उनकी शादी आथिया शेट्री के पिता यानी सुनील शेट्टी के खंडाला स्थित फार्महाउस में हुई थी। उनके शादी समारोह में केवल परिवार के सदस्यी और करीबी दोस्त ही शामिल हुए थे।

आईपीएल में नहीं बिके वॉर्नर तो पीएसएल में बने कप्तान, कराची किंग्स की संभालेंगे कमान

नई दिल्ली, 24 मार्च। पाकिस्तान सुपर लीग के 10वें सीजन का आगाज 11 अप्रैल से होने जा रहा है। पीएसएल 2025 से पहले कराची किंग्स ने एक बड़ा फैसला लिया है। कराची ने ऑस्ट्रेलिया के पूर्व बल्लेबाज डेविड वॉर्नर को अपना नया कप्तान बनाया है। फ्रेंचाइजी ने शान मसूद की जगह उन्हें ये जिम्मेदारी दी है। वहीं फ्रेंचाइजी ने इसके लिए शान मसूद को थैंक्यू भी बोला है। जिन्होंने पिछले सीजन में कराची टीम की कमान संभाली थी। वॉर्नर पहली बार पाकिस्तान सुपर लीग में खेलते हुए नजर आएंगे।38 वर्षीय वॉर्नर को पिछले साल आईपीएल मेगा ऑक्शन में रुसवाई मिली थी। जिस कारण उन्हें ऑक्शन में खरीददार नहीं मिला। उनका नीलामी में बेस प्राइस 2 करोड़ रुपये था मगर किसी भी आईपीएल फ्रेंचाइजी ने उनमें दिलचस्पी नहीं दिखाई।

लखनऊ सुपर जांयट्स पर भारी दिल्ली कैपिटल्स के आशुतोष शर्मा की पारी

विशाखापत्तनम, 24 मार्च। आशुतोष शर्मा (नाबाद 66), विपराज निगम (39) और ट्रिस्टन स्टब्स (34) की शानदार पारियों की बदौलत दिल्ली कैपिल्स ने सोमवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के रोमांचक मुकाबले में लखनऊ सुपर जायंट्स को तीन गेंदे शेष रहते एक विकेट से हरा दिया।

210 रनों का लक्ष्य का पीछा करने उतरी दिल्ली कैपिटल्स की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने महज सात रन के स्कोर पर अपने तीन विकेट गवां दिये। जेक फ्रेजर-मक्गर्क (एक) और इसी ओवर में अभिषेक पोरेल (शून्य) को शार्दुल ठाकुर ने आउट कर दिल्ली दो बडे झटके दिये। तीसरा विकेट समीर रिजवी (चार) के रूप में दिल्ली का गिरा। इसके बाद कप्तान अक्षर पटेल ने फॉफ डुप्लेसी ने पारी को संभालने का प्रयास किया। छठे ओवर में दिग्वेश राठी ने अक्षर पटेल 11 गेंदों में (22) को आउट कर पवेलियन भेज दिया। सातवें ओवर में रवि बिश्नोई ने फॉफ डुप्लेसी 18 गेंदों में (29) को आउट कर दिल्ली को पांचवां झटका दिया। इसके

बाद ट्रिस्टन स्टब्स और आशुतोष शर्मा ने पारी को संभाला। अभी टीम का स्कोर 113 रन पहुंचा था कि मनीमारन सिद्धार्थ ने ट्रिस्टन स्टब्स को बोल्ड कर लखनऊ के लिए छठा विकेट लिया। स्टब्स ने 22 गेंदों में एक चौका और तीन छक्के लगाते हुए (34) रन बनाये।

इसके बाद बल्लेबाजी करने आये विपराज निगम लखनऊ के गेंदबाजों पर कहर बनकर टूटे। निगम ने 15 गेंदों में पांच चौके और दो छक्के लगाते हुए (39) रनों की तूफानी पारी खेली। उन्हें 17वें ओवर की पहली गेंद पर दिग्वेश राठी ने आउट किया। 18वें ओवर की पहली गेंद पर रवि बिश्नोई ने मिचेल स्टार्क (दो) को आउट कर दिल्ली को आठवां झटका दिया। हालांकि इस दौरान दिल्ली के आशुतोष शर्मा ने हार नहीं मानी और एक छोर थामे लगातार तेजी के साथ रन बनाते रहे। आशुतोष ने 31 गेंदों मे पांच चौके और पांच छक्के लगाते हुए (नाबाद 66) रनों की आतिशी पारी खेली। आशुतोष ने 20वें ओवर की तीसरी गेंद पर छक्का लगाकर दिल्ली को जीत दिलाई। दिल्ली ने19.3 ओवरों में नौ विकेट पर 211 रन बनाकर मुकाबला एक विकेट से जीत लिया। लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए रवि बिश्नोई, मनीमारन सिद्धार्थ, दिग्वेश राठी और शार्दुल ठाकुर ने दो-दो विकेट लिये।

गुजरात टाइटंस बनाम पंजाब किंग्स के बीच होगी रोमांचक भिड़ंत

गुजरात, 24 मार्च। बल्लेबाजों के लिए उच्च स्कोरिंग वाली अहमदाबाद के नरेन्द्र मोटी स्टेडियम की पिच पर मंगलवार को होने वाले इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के पांचवें मुकाबले में गुजरात टाइटंस (जीटी) और पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) के बीच रोमांचक भिड़ंत होगी। दोनों टीमों के बीच आंकड़ों की बात की जाये तो हमेशा मुकाबला रोमांचक होता रहा है। वर्ष 2022 से 2024 तक गुजरात टाइटंस और पंजाब किंग्स के बीच अब तक हुए पांच मुकाबलों में से चार मैच अंतिम ओवर तक गए हैं इससे यह साबित होता है कि दोनों टीमों के बीच मैच कितना रोमांचक होता है।

इन पांच मैचों में गुजरात ने तीन और पंजाब ने दो मैचों में जीत दर्ज की। दोनों टीमों के बल्लेबाजों की बात की जाये तो ग्लेन मैक्सवेल को बीच के ओवरों में आक्रामक बल्लेबाजी के लिये जाना जाता हैं। छक्के लगाने के मामले में भी मैक्सवेल सबसे सबसे आगे है। दोनों टीमों में ग्लेन मैक्सवेल (161 छक्के), जॉस बटलर (160 छक्के) और मार्कस स्टॉयनिस के नाम (91 छक्के) हैं। इसके अलावा पंजाब की टीम में शशांक सिंह और प्रभसिमरन सिंह जैसे उभरते हुए युवा खिलाड़ी हैं। जो हर तीसरी या चौथी गेंद पर कम से कम एक बाउंड्री लगाते हैं। पंजाब के प्रभसिमरन सिंह ने अब तक 10 मैचों में 154.72 के स्टाइक रेट से 229 रन बनाये हैं। वहीं इस बार गुजरात को शुभमन गिल और जॉस बटलर के रूप में नई सलामी जोड़ी मिली है और दोनों पावरप्ले के दौरान अच्छा खासा स्कोर बनाने के लिये जाने जाते हैं। गिल ने 10 मैचों में 147.7 के स्टाइक रेट से 383 रन बनाये है।

स्पिनरों की बात की जाये तो आईपीएल 2023 से सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में वरूण चक्रवर्ती (41) विकेट के साथ सबसे आगे, दूसरे नवंबर पर युजवेंद्र चहल (39) विकेट और राशिद खान (37) विकेट के साथ तीसरे नंबर आता है। तीनों ही गेंदबाज अपनी टीमों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं और वह अपने दम पर मैच पलटने का माद्दा रखते हैं। गुजरात टाइटंस के लिए राशिद खान को अपनी कसी हुई गेंदबाजी के लिए जाना जाता हैं।

राशिद ने मैक्सवेल के खिलाफ 15 टी-20 पारियों में केवल 117 के स्ट्राइक रेट से रन दिया है। राशिद ने मैक्सवेल को अभी तक तीन बार आउट किया हैं। अगर राशिद अपने इस रिकॉर्ड के अनुसार प्रदर्शन करते हैं तो बीच के ओवरों में मैक्सवेल के लिए परेशानी का सबब बन सकते हैं। पंजाब किंग्स के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह हैं, जिनके खिलाफ बटलर और गिल का स्ट्राइक रेट क्रमशः 150 और 126 है। अर्शदीप इन दोनों बल्लेबाजों को टी-20 मैचों में केवल एक बार ही आउट कर पाए हैं। अर्शदीप भी इस रिकॉर्ड को सुधारना करने मैदान में उतरेंगे।

पावर लिफ्टर सीमा रानी, झंडू कुमार ने राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़े, मोना अग्रवाल ने स्वर्ण पदक जीता

नई दिल्ली, 24 मार्च। खेलो इंडिया पैरा गेम्स 2025 (केआईपीजी) के पांचवें दिन दो पावरलिफ्टिंग में दो राष्ट्रीय रिकार्ड बने। वहीं निशानेबाजी में मोना अग्रवाल ने स्वर्ण पदक जीता। पंजाब की सीमा रानी ने महिलाओं के इलीट 61 किलोग्राम वर्ग में 97 किलोग्राम का रिकॉर्ड भार उठाया, जबकि बिहार के झंडू कुमार ने पुरुषों के इलीट 72 किलोग्राम वर्ग में 206 किलोग्राम भार उठाकर अपना ही रिकार्ड बेहतर किया।

उधर, डॉ. कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में पैरालिंपियनों ने दबदबा बनाया। पेरिस 2024 की कांस्य पदक विजेता मोना अग्रवाल ने मिक्स्ड 50 मीटर प्रोन एसएच1 में 243.3 के स्कोर के साथ स्वर्ण पदक जीता। वह महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग एसएच 1 और मिश्रित 10 मीटर एयर राइफल प्रोन एसएच2 श्रेणियों में पहले ही दो रजत पदक जीत चुकी हैं। पैरा निशानेबाजी के अंतिम दिन, राजस्थान के निहाल सिंह (जिन्होंने पेरिस पैरालिंपिक के लिए भी क्वालीफाई किया था), मिश्रित 25 मीटर पिस्टल एसएच1 स्पर्धा में हावी रहे, और दिसंबर 2023 में आयोजित खेलो इंडिया पैरा गेम्स के पहले संस्करण से जीता गया अपना स्वर्ण पदक बरकरार रखा। पदक तालिका में हरियाणा 29 स्वर्ण के साथ शीर्ष पर बना हुआ है। तमिलनाडु और राजस्थान 24 और 22 स्वर्ण पदकों के साथ क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। सीमा ने साई मीडिया से बातचीत में कहा, नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाना और लगातार खेलो इंडिया पैरा गेम्स में स्वर्ण पदक जीतना बहुत अच्छा लग रहा है। मैं एथलीटों के लिए विश्व स्तरीय व्यवस्था करने के लिए साई को धन्यवाद देती हूं।

जोकोविच ने कैराबेली को हराकर बनाई मियामी ओपन के अंतिम 16 में जगह

फ्लोरिडा, 24 मार्च। सर्बिया के स्टार टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने अर्जेंटीना के कैमिलो उगो कैराबेली को हराकर मियामी ओपन के अंतिम 16 में जगह बनाई। चौथी वरीयता प्राप्त सर्बियाई खिलाड़ी जोकोविच ने अर्जेंटीना के कैराबेली को 6-1, 7-6, (7-1), से हराया। जोकोविच ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए पहला सेट मात्र 34 मिनट में जीत लिया और दूसरे सेट में जल्दी ही ब्रेक ले लिया। 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन ने जोकोविच ने टाई-ब्रेक के बाद कैराबेली को 7-1 से हराकर अपनी जीत सुनिश्चित की। इस जीत के साथ ही जोकोविच एटीपी मास्टर्स 1000 इवेंट्स में 411 जीत के आंकड़े पर पहुंच गए हैं।

तमीम इकबाल सीने में दर्द के बाद अस्पताल में भर्ती

ढाका, 24 मार्च। बांग्लादेश के पूर्व कप्तान तमीम इकबाल को ढाका में ढाका प्रीमियर डिवीजन क्रिकेट लीग मैच के दौरान सीने में दर्द के बाद सोमवार को अस्पताल में भर्ती कराया गया। ईएसपीएन क्रिकइन्फो की रिपोर्ट के अनुसार मोहम्मडन स्पोर्टिंग क्लब और शाइनपुकुर क्रिकेट क्लब के बीच खेले गए 50 ओवर के मैच के दौरान पहली पारी में 36 वर्षीय इकबाल को सीने में दर्द महसूस

हुआ जिसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। रिपोर्ट के अनुसार मैच रेफरी देबब्रत पॉल ने कहा "शुरुआत में तमीम को अस्पताल ले जाने के लिए हेलीकॉप्टर की व्यवस्था की गई थी, लेकिन उन्हें सावर के बीकेएसपी मैदान से नहीं लाया जा सका। बाद में उन्हें फाज़िलतुन्नेस अस्पताल में भर्ती कराया गया।" तमीम इकबाल ने इसी साल जनवरी में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की थी। उन्होंने बांग्लादेश के लिए 70 टेस्ट और 243 एकदिवसीय मैच में क्रमशः 5,134 रन और 8,357 रन बनाए। उन्होंने 78 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में भी बांग्लादेश का प्रतिनिधित्व किया जिनमें उन्होंने 1,758रन बनाए।

कोच और कप्तानी को लेकर बीसीबी करेगा बैठक

ढाका, 24 मार्च। बंगलादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) सोमवार को तात्कालिक एजेंड के तहत कोच और टीम के कप्तान सहित कई मुद्दों को लेकर बैठक करेगा। डेली स्टार की रिपोर्ट के अनुसार वेस्ट इंडीज में 3-0 की सीरीज में क्लीन स्वीप के बाद लिटन दास ने भी दावा किया था कि अगर बीसीबी चाहे तो वह टीम की कप्तानी संभालने के लिए तैयार हैं। बोर्ड के सूत्रों अनुसार चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर रखे गए लिटन दास का टी-20 कप्तानी को लेकर नाम सबसे आगे चल रहा है। हन्नान सरकार के इस्तीफे के बाद से राष्ट्रीय टीम बिना चयनकर्ता के है। बैठक में इस स्थान को भरने के लिए भी विचार-विमर्श होना है। बीसीबी के एक सूत्र ने बताया, कुछ प्रस्ताव रखे जाएंगे और उन पर चर्चा की जाएगी। सज्जाद अहमद प्रस्तावित नामों में से एक माने जा रहा है। बीसीबी ने मुख्य कोच फिल सिमंस के बारे में सकारात्मक रुख अपनाया है।

फैडरेशन कप में भाग लेने वाली राजस्थान (पुरुष/महिला) वुशू टीम की घोषणा

जयपुर, 24 मार्च। भारतीय वुशू संघ के तत्वावधान में दिनांक 24 से 28 मार्च 2025 तक बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में आयोजित होने वाली 08वी फेडरेशन कप (पुरुष/महिला) वुशू प्रतियोगिता में भाग लेने वाली राजस्थान वुशू टीम की हीरानन्द कटारिया अध्यक्ष, राजस्थान वुशू संघ ने घोषणा की। अध्यक्ष के अनुसार प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाडियों के नाम इस प्रकार है -

पुरुष टीम :- मुकुंद आचार्य, अमन पारीक, मानस थापिलियाल, नीरज वर्मा, कृष्णा झाझड़ा, हीरालाल चौधरी, दीपक चौधरी, जसवीर यादव, लोकेश कुमार पूनिया, अमित कटारिया, विजय भारद्वाज, रजत प्रकाश गुप्ता, बलवंत सिंह, नक्षत्र जांगिड़, निखिल सैन, लोकेन्द्र सिंह, आर्केश्वर मेडतवाल, किशन कुमार, प्रेम सिंह, मनोज चित्तौडीया, गुलशन, दीपक, श्रवण, दक्षित चौधरी,

महिला टीम :- दिव्या यादव, रिंकू चौधरी, अश्मिता, खुशी गहलोत, पूर्ती शर्मा, कृतिका पारीक, पायल सारण, दिव्या बाटर, नीलम चौधरी, तनीषा महावर, संजू सैनी, चारु पारीक।

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी खिलाडियों को विनोद सिंह शेखावत, मुख्य संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, गोपाल सैनी, संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, राजस्थान वुशू संघ व सभी पदाधिकारियों ने पदक जीत कर आने की शुभकामनाएं प्रदान की।

बीकानेर ने जीता टीम ऑफ फोर डुप्लीकेट स्पर्धा का खिताब

जयपुर, 24 मार्च। बीकानेर ने रविवार को यहां जयपुर क्लब में संपन्न 41वीं राजस्थान कान्ट्रेक्ट ब्रिज चैंपियनशिप टीम ऑफ फोर डुप्लीकेट स्पर्धा का खिताब जीत लिया। इबरत खान, राजेन्द्र कुमार, प्रदीप गोविल, एमएम मूंदड़ा, एनएस राठौड़ और एसएस राठौड़ की बीकानेर टीम ने फाइनल मुकाबले में

ओपी अग्रवाल, आरएस गेरा, रवि भार्गव और अश्विनी चोपड़ा की कोटा टीम को 27.69-12.31 पॉइंट से पराजित कर टीम इवेंट की पीसी अग्रवाल ट्रॉफी अपने नाम की। इससे पूर्व सेमी फाइनल में बीकानेर ने भीलवाड़ा को 32.13-7.87 और कोटा ने राजपूताना टीम को 25.71-14.29 पॉइंट से शिकस्त दे फाइनल में जगह बनाई थी। बीएम तोषनीवाल ट्रॉफी के लिए खेली पेयर इवेंट का खिताब प्रदीप गोविल और एमएम मूंदड़ा की जोड़ी ने जीता। गोविल-मूंदड़ा की जोड़ी 54 पॉइंट्स के साथ शीर्ष पर रही।

अखिल भारतीय सिविल सेवा क्रिकेट प्रतियोगिता कप्तान राष्ट्रीय यादव की अगुवाई में राजस्थान टीम ने रचा इतिहास, मेजबान दिल्ली को फाइनल में हराया

जयपुर, 24 मार्च । नई दिल्ली में खेले जा रहे अखिल भारतीय सिविल सेवा क्रिकेट प्रतियोगिता में खेले गए फाइनल मुकाबले में कप्तान राष्ट्रदीप की अगुवाई में राजस्थान टीम ने दिल्ली को रोमांचक मुकाबले में 5 रन से हराकर इतिहास रच दिया है।

भारत नगर स्टेडियम, नई दिल्ली में खेले गए फाइनल मैच में दिल्ली की रीजनल बोर्ड की टीम, जिसमें पूर्व भारतीय खिलाड़ी परविंदर अवना एवं आईपीएल खिलाड़ी शशांक वशिष्ठ भी इस टीम का हिस्सा थे जिसको राजस्थान टीम ने हरा दिया। राजस्थान टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 6 विकेट के नुकसान पर 234 रन बनाए। जिसमें शाकिर खान ने 73, अजय बेनीवाल ने 55, राजू जोशी ने 44 रनों का योगदान दिया। जवाब में दिल्ली ने 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 229 रन ही बना सकी और 5 रन राजस्थान ने इस फाइनल मुकाबले को जीत लिया। गेंदबाजी में राजस्थान की ओर से हितेश ने 2 विकेट और अक्षय, शुभम, शाहबाज, शाकिर ने 1-1 विकेट लिए। राजस्थान के अजय बेनिवाल को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज चुना गया है, जिन्होंने प्रतियोगिता में 400 रन बनाए और कप्तान राष्ट्रदीप यादव ने प्रतियोगिता में 10 विकेट लिए। कप्तान राष्ट्रदीप यादव के नेतृत्व में पहली बार राजस्थान ने इस फाइनल का खिताब जीतकर इतिहास रचा। कार्मिक विभाग के शासन सचिव श्री के.के. पाठक ने टीम को विजेता बनने पर बधाई दी।

आदित्य का ऑलराउंड खेल तथा शिवांक व अविनाश के अर्द्धशतकों से भदोरिया की आसान जीत

जयपुर, 24 मार्च। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27 वीं नवीन-नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज नारायणा क्रिकेट ग्राउण्ड सिरसी पर खेले गये पूल-बी के मैच में भदोरिया क्रिकेट एकेडमी ने आदित्य चौधरी 32 रन नाबाद (15 गेंद, 2 चौके, 2 छक्के) व 27 रन पर 2 विकेट के ऑलराउण्ड प्रदर्शन और शिवांक सिंह शेखावत 80 रन, (34 गेंद, 7 चौके, 7 छक्के) तथा अविनाश शर्मा 61 रन (38 गेंद, 6 चौका, 2 छक्के) के अर्द्धशतको की मदद से कोडाई क्रिकेट एकेडमी को 77 रन से हराकर 2 अंक अर्जित किये।

राजधानी

राजस्थान दिवस को उत्सव के रूप में मनाएं : भजनलाल शर्मा

- ‘विकसित राजस्थान के लिए प्रतिबद्ध होकर करें कार्य’
- 25 से 31 मार्च तक सप्ताहभर होंगे विभिन्न आयोजन

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मंशानुरूप राज्य सरकार चार जातियों किसान, युवा, महिला एवं गरीब के कल्याण एवं उत्थान एवं आमजन के लिएगुड गवर्नेंस के क्रम में राजस्थान दिवस (30 मार्च, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) वृहद् स्तर पर मना रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश का प्रत्येक नागरिक राजस्थान दिवस के कार्यक्रमों में उत्साह एवं उमंग के साथ भाग ले और राजस्थान को विकसित प्रदेश बनाने के लिए समर्पण एवं सेवा-भाव से कार्य करे।

शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर राजस्थान दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के संबंध में समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने सप्ताहभर चलने वाले कार्यक्रमों में भाग लेने वाले प्रतिभागियों एवं आगंतुकों की परिवहन, पेयजल एवं सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। उन्होंने राजस्थान दिवस (30 मार्च)के अवसर पर सभी जिलों के सरकारी इमारतों पर साज-सज्जा एवं लाइटिंग करने के लिए निर्देशित किया। साथ ही, देवस्थान विभाग को मंदिरों में आरती कार्यक्रम आयोजित करने के लिए भी निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस महानिदेशक यू आर साहू को राजस्थान दिवस आयोजनों के क्रम में प्रदेश के सभी जिलों में सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद रखने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रत्येक नागरिक के लिए राजस्थान दिवस गौरव की अनुभूति है। इस दिवस पर आमजन राजस्थान को विकसित बनाने के लिए सेवा और

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को उनके निवास पर राजस्थान दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के संबंध में समीक्षा बैठक को संबोधित किया।

समर्पण भाव के साथ कार्य करें। उन्होंने कार्मिक विभाग को राजस्थान दिवस पर विकसित राजस्थान के संबंध में शपथ का प्रारूप बनाने के लिए निर्देशित किया। यह शपथ निजी एवं सरकारी संस्थानों के कार्मिकों द्वारा ली जाएगी। साथ ही, मुख्यमंत्री ने सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग को राजस्थान दिवस के आयोजनों का प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार करने के लिए भी निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि प्रवासी राजस्थानियों द्वारा राजस्थान दिवस देश के अन्य प्रदेशों एवं विदेशों में भी उल्लास से मनाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विधानसभा में वित्त एवं विनियोग विधेयक पर चर्चा का प्रत्युत्तर के दौरान देश के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा 30 मार्च, 1949 (वर्ष प्रतिपदा संवत् 2006) के अवसर पर दिए भाषण का उल्लेख करते हुए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को राजस्थान दिवस भारतीय रीति-नीति से मनाएजाने की घोषणा की थी।

बैठक में मुख्यमंत्री को संबंधित अधिकारियों ने राजस्थान दिवस के संबंध में आयोजित होने वाले प्रस्तावित कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही, 30 मार्च को प्रदेश केप्रत्येक जिले में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जयपुर के अल्बर्ट हॉल में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों द्वारा माँगनियार प्रस्तुति एवं कत्थक एवं लोक नृत्यों की फ्यूजन प्रस्तुति दी जाएगी। कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतिम दिवस 31 मार्च को जयपुर में राईजिंग राजस्थान में 3 लाख करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट की ग्राउण्ड ब्रेकिंग की जाएगी। साथ ही, लॉजिस्टिक, डेटा सेंटर एवं टेक्सटाइल पॉलिसी का विमोचन किया जाएगा।

इस दौरान मुख्य सचिव सुधांश पंत, पुलिस महानिदेशक यू आर साहू, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा आलोक, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, अतिरिक्त मुख्य सचिव सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता कुलदीप रांका, अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास श्रेया गुहा, अतिरिक्त मुख्य सचिव गृह आनंद कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव पीएचईडी भास्कर ए सावंत, प्रमुख सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) आलोक गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के प्रमुख शासन सचिव, शासन सचिव सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

मुझे गर्व है कि मैं भी एक सैनिक की पुत्री हूं : दिया कुमारी

जयपुर। उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी सोमवार को मिलिट्री स्टेशन में सप्त शक्ति कमांड द्वारा आयोजित वीर नारी एवं वीरांगना मिलन समारोह में सम्मिलित होकर देश की रक्षा में अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले देश के वीर जवानों की वीरांगनाओं को सम्मानित कर राष्ट्रिहत में उनके त्याग एवं बलिदान को नमन किया। राजस्थान में वीरांगनाओं की समृद्ध विरासत है और यहां 11,443 वीर नारियां है। समारोह में जयपुर, दौसा और अलवर जिलों से 67 वीर नारियों ने भाग लिया। इनके अलावा वीरांगनाएं, भूतपूर्व सैनिक, सेवारत सैनिक और उनके परिवार भी समारोह में शामिल हुए। उपमुख्यमंत्री ने राष्ट्र निर्माण में उनके अपार बलिदान और निस्वार्थ योगदान को याद करते हुए वीर नारियों को सम्मानित किया।

दिया कुमारी ने अपने संबोधन में निस्वार्थ सेवा, समर्पण और वीरता के लिए सैनिकों और गौरव सेनानियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने वीर नारियों द्वारा अपने परिवारों और समाज के लिए शक्ति का स्तंभ बनने में दिए गए समर्थन और महत्वपूर्ण भूमिका को भी स्वीकार किया। उपमुख्यमंत्री ने महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास और वीर नारियों और गौरव सेनानियों के कल्याण के लिए सप्त शक्ति कमान द्वारा किए गए प्रयासों की भी सराहना की। उन्होंने उपस्थित सभी लोगों को आश्वस्त किया कि राज्य सरकार गौरव सेनानियों, वीर नारियों और वीरांगनाओं के कल्याण और विकास को सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास करने के लिए तैयार है।

उन्होंने समाज और राष्ट्र हेतु अमूल्य योगदान के लिए वीर नारियों, वीरांगनाओं और गौरव सेनानियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं भी एक सैनिक की पुत्री हूं। दिया कुमारी ने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि आवा अध्यक्ष मिसेज मनजिंदर सिंह के नेतृत्व में सैनिक परिवारों के कल्याण, बच्चों की शिक्षा, उनके विकास, वीर नारी और विरांगनाओं के सम्मान, सशक्तिकरण के लिए लगातार अनेक कार्यक्रम कर रही है जो कि प्रशंसनीय हैं। आपके द्वारा दिव्यांग बच्चों की शिक्षा, शहीद सैनिकों के लिए मोक्षधाम बनाने, सस्ती दरों में केंटीन व्यवस्था, और वीरांगनाओं के रोजगार में आ रही परेशानी को दूर करने, वृद्धाश्रम के लिए प्रयास करने जैसे कार्य किया जाना सराहनीय है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने की जनसुनवाई

हाथों हाथ हुआ कुछ भू-रुपांतरण प्रकरणों का निस्तारण

जयपुर, 24 मार्च। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर जनसुनवाई की और परिवेदनाओं का त्वरित निस्तारण किया।

मुख्यमंत्री ने जनसुनवाई में आए प्रत्येक व्यक्ति से मुलाकात की और

- **जनसुनवाई में आए लोग अपनी समस्याओं के त्वरित निस्तारण से काफी प्रसन्न नज़र आए तथा उन्होंने मुख्यमंत्री को धन्यवाद दिया।**

उनकी समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश भी दिए।

जनसुनवाई के दौरान जयपुर निवासी वेद चतुर्वेदी के भू-रूपांतरण प्रकरण का कुछ ही घंटों में निस्तारण किया गया। चतुर्वेदी ने बताया कि उनके सुंदर नगर (मानसरोवर) स्थित 840 वर्ग गज आवासीय भू-खण्ड का होटल उपयोग हेतु भू-रूपांतरण का मामला लंबित था।

मुख्यमंत्री शर्मा को इस संबंध में जब उन्होंने अवगत कराया तो इसका तुरंत ही निस्तारण कर दिया गया। मात्र चार घंटे के अंदर भू-रूपांतरण कार्य के आदेश जारी कर दिए गए।

आमजन से जुड़े कई प्रकरणों में मुख्यमंत्री ने तुरंत कार्यवाही की, इसके लिए परिवादियों ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर जनसुनवाई की। उन्होंने जनसुनवाई में आए प्रत्येक व्यक्ति से मुलाकात की, उनकी समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए।

जनसुनवाई के दौरान, मुख्यमंत्री ने जयपुर विकास प्राधिकरण, नगर निगम, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी, सार्वजनिक निर्माण एवं चिकित्सा सहित विभिन्न विभागों की आमजन से संबंधित समस्याएं सुनीं तथा कई समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण कर परिवादियों को राहत दी। जनसुनवाई के दौरान, आमजन ने राज्य बजट वर्ष 2025-26 में दी गई सौगातों के लिए शर्मा का आभार जताया तथा दुपट्टा ओढ़ाकर उनका अभिनन्दन किया। जनसुनवाई में जनप्रतिनिधि और आमजन उपस्थित थे।

जनसुनवाई में बालोतरा की बबीता कुमारी ने मुख्यमंत्री को दांतों से संबंधित बीमारी से अवगत करवाया तथा शीघ्र इलाज के लिए निवेदन किया। इस पर मुख्यमंत्री ने बबीता कुमारी को तुरंत चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। पाली से आई कैंसर रोग से ग्रसित गायत्री ने कैंसर की दवा उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री से आग्रह किया। इस पर शर्मा ने गायत्री को निःशुल्क कैंसर की दवा उपलब्ध कराने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए। बबीता और गायत्री अपनी परिवेदनाओं के त्वरित निस्तारण से बेहद खुश नजर आईं और उन्होंने मुख्यमंत्री को बार-बार धन्यवाद दिया।

नागपुर हिंसाः दो आरोपियों के घर गिराने पर हाईकोर्ट का स्टे

मुंबई, 24 मार्च। बॉम्बे हाईकोर्ट की नागपुर बेंच ने नागपुर हिंसा मामले में दो आरोपियों के घरों को गिराने की प्रशासनिक कार्रवाई पर रोक लगा दी है। अदालत ने इस मामले में प्रशासन के रवैये को मनमाना और दमनकारी बताते हुए कड़ी फटकार भी लगाई। बता दें कि, नागपुर में हुई हिंसा के बाद स्थानीय प्रशासन ने आरोपियों के घरों को तोड़ने की कार्रवाई शुरू की थी, जिसे लेकर अदालत में चुनौती दी गई थी। इस मामले की अगली सुनवाई जल्द होने की संभावना है।

ग्रीनलैण्ड को ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

व अन्य महत्वपूर्ण उपकरणों के निर्माण में बेहद जरुरी होते हैं। रुस और चीन की भी इन खनिजों में गहन रुचि है।

अमेरिकी प्रवक्ताओं ने ग्रीनलैंड के लोगों से कहा है कि अगर इसे अमेरिका अपने में मिला लेता है तो अमेरिका इसकी पूरी देखभाल करेगा और अन्य ताकतों की लालची नज़रों से इसकी सुरक्षा करेगा। लेकिन अमेरिका के आश्वासन के बाद भी द्वीप के लोगों की चिंताएं कम नहीं हुई हैं। ये लोग डेनमार्क से आज़ादी के लिए लम्बे समय से संघर्षरत हैं। द्वीप की विधानसभा के चुनावों के साथ, अलग होने की औपचारिक प्रक्रिया पर काम चल रहा है। नए अमेरिकन राष्ट्रपति ट्रंप जोरशोर से दावा कर रहे हैं कि औपचारिक प्रक्रिया पूरी होने से पहले ही ग्रीनलैंड अमेरिकन स्टेट बन जाएगा।

ऐसा लग रहा है कि दुनिया से मध्यकालीन युग में आ गई है और संप्रभु राष्ट्रों के पारस्परिक संबंध नियंत्रित करने के लिए कोई कानून नहीं है।

जेल प्रहरी भर्ती पेपरलीक, दो आरोपी गिरफ्तार

एसओजी ने 2018 में हुई इस परीक्षा का आयोजन करवाने वाली कम्पनी के प्रोजैक्ट मैनेजर व एक अन्य को गिरफ्तार किया है

जयपुर, 24 मार्च। जेल प्रहरी भर्ती परीक्षा पेपर लीक मामले में एसओजी ने परीक्षा करवाने वाली टीसीएस कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जेल प्रहरी भर्ती परीक्षा का आयोजन सरदार पटेल यूनिवर्सिटी जोधपुर की ओर से करवाया गया था और उसने परीक्षा का जिम्मा टीसीएस कम्पनी को दिया था। इस मामले में अरेस्ट दूसरे आरोपी ने इस गैंग को उत्तर कुंजी उपलब्ध करवाई थी।

- **जेल प्रहरी भर्ती परीक्षा 2018 में एटीएस पहले ही 7 लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है, एसओजी भी अलग कार्यवाही कर कई लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है।**

ए.डी. डी.जी.पी. वी.के. सिंह

एडीजी एसओजी-एटीएस वीके सिंह ने बताया कि एसओजी की टीम ने जेल प्रहरी भर्ती परीक्षा 2018 के मामले में देहरादून से करण कुमार निवासी जमशेदपुर, झारखंड और टीसीएस कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर जगजीत सिंह निवासी झारखंड को गिरफ्तार किया है। एसओजी ने करण के पास मिले मोबाइल व लैपटॉप जब्त कर लिये हैं। आरोपी करण कुमार से पूछताछ में सामने आया कि जेल प्रहरी भर्ती परीक्षा 2018 के पेपर उसे उस समय टीसीएस कम्पनी में कार्यरत प्रोजेक्ट मैनेजर जगजीत सिंह ने उपलब्ध करवाए थे। चूंकि आरोपी की ओर से दी गई सूचना सही प्रतीत होने का मुख्य कारण यह है कि यह परीक्षा टीसीएस कम्पनी द्वारा ही सम्पन्न कराई गई थी तथा परीक्षा कराने का जिम्मा सरदार पटेल युनिवर्सिटी जोधपुर द्वारा टीसीएस कम्पनी को दिया गया था। आरोपी करण द्वारा इस गैंग को उत्तर कुंजी उपलब्ध करवाई थी।

जेल प्रहरी भर्ती परीक्षा 2018 पेपर लीक मामले में एटीएस पहले जितेन्द्र चौधरी, अजय यादव, सुरेश चौधरी, विकास, राजेश, जितेन्द्र राव व राजेन्द्र गुर्जर को गिरफ्तार कर चुकी है, जबकि एसओजी अलग कार्रवाई करके कई आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। अब तक एसओजी व एटीएस जेल प्रहरी भर्ती परीक्षा का पेपर लीक करने के मामले में एक दर्जन से अधिक आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी हैं।

गौरतलब है कि ऑनलाइन परीक्षा की जिम्मेदारी सरदार पटेल यूनिवर्सिटी ने टीसीएस कंपनी को दी थी। जेल प्रहरी परीक्षा का पहला चरण 20 और 21 अक्टूबर और दूसरा चरण 27 और 28 अक्टूबर का था। आरोपियों ने 28 अक्टूबर को पहली पारी का पर्चा लीक कर दिया था। इसके बाद, यह मामला सामने आया था। एटीएस व एसओजी ने पर्चा लीक करने वाले रैकेट का 29 अक्टूबर को खुलासा किया था।

45 पुराने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विपक्षी सदस्यों ने चर्चा के दौरान सवाल खड़े करते हुए कहा कि बिल को जल्दबाजी में लाया गया है। कांग्रेस विधायक मनीष यादव ने कहा कि कई और भी ऐसे कानून हैं, जो अप्रचलित हैं। उन्हें भी शामिल किया जाए, इसलिए इस बिल को फिलहाल प्रवर समिति को भेजा जाए। विधायक रोहित बोहरा ने कहा कि 45 अनुपयोगी कानूनों को निरस्त करने का जो बिल लाए हैं, उसकी कॉपी पहले ही विधायकों को भेज दी जाती, तो सब पढ़ लेते। हम इस बिल के विरोध में नहीं है, लेकिन जो भी बिल ला रहे हैं, उसे पढ़ने का तो मौका मिलना ही चाहिए, बिल लेकर आ जाओगे और हम गर्दन हिला कर उसका समर्थन कर देंगे, ऐसा नहीं हो सकता।

अब सांसदों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दरअसल, उस समय विपक्षी भाजपा मुस्लिमों को 4 प्रतिशत आरक्षण दिये जाने का विरोध कर रही थी। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा प्रतीत होता है कि विपक्ष के राजनैतिक दल जनता के दुख-दर्दों की उपेक्षा करने वाले तथा अपने निजी हितों का ख्याल रखने वाले हो गये हैं तथा सरकारों के ऐसे कदमों से आम जनता में राजनेताओं के प्रति कटुता में और वृद्धि होगी। कोई यह नहीं मानता कि सांसदों या पूर्व सांसदों को बेहतर वेतन नहीं मिलना चाहिये। लेकिन, वेतन में की गई इस वृद्धि से कानून-निर्माताओं और आम लोगों के बीच की असमानता और ज्यादा स्पष्ट हो गई है। आज की गई वृद्धि से, एक पूर्व सांसद की आय एक भारतीय वर्कर की औसत आय की दोगुनी से अधिक हो गई है, जबकि, वर्तमान सांसद की आय उसकी करीब नौगुनी हो गई है।

अच्छा हुआ कोचिंग बिल प्रवर समिति को सौंपा गया

निर्दलीय विधायकों ने ही नहीं भाजपा के कुछ विधायकों ने भी कोचिंग बिल में जमकर कमियां निकालीं

जयपुर, 24 मार्च। राजस्थान विधानसभा में कोचिंग रेगुलेशन बिल भी अटक गया है। बिल पर विरोध के चलते इसे प्रवर समिति को सौंप दिया गया है। इसके बाद विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। कोचिंग रेगुलेशन बिल पर बहस के दौरान भाजपा व निर्दलीय विधायकों ने ही इसके प्रावधानों का विरोध किया।

कोचिंग रेगुलेशन बिल पर बहस के दौरान भाजपा विधायक और सत्तारूढ़ पार्टी के उम्र में सबसे वरिष्ठ विधायक कालीचरण सराफ ने इसके प्रावधानों का खुलकर विरोध किया। सराफ ने इस बिल पर प्रवर समिति को भेजने की मांग की। सराफ ने कहा कि यह बिल अगर मौजूदा स्वरूप में पारित हो गया तो कोचिंग संस्थान राजस्थान से बाहर शिफ्ट हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि हजारों शिक्षक बेरोजगार हो जाएंगे और 60 हजार करोड़ का कोराबार छोटा हो जाएगा। विधानसभा अध्यक्ष को संबोधित करते हुए कालीचरण सराफ ने कहा कि इस बिल से अफसरशाही हावी हो जाएगी। सराफ ने मांग की कि इस बिल पर पहले कोचिंग संस्थानों, जनता, स्टूडेंट और शिक्षकों -सब से बात होनी चाहिए। कालीचरण ने बिल की आलोचना करते हुए कहा कि इसमें स्टेट और जिला लेवल पर कमेटी बनाने का प्रावधान कर दिया, परन्तु पहले से ही कलेक्टर 50 कमेटियों का अध्यक्ष होता है, उस पर यह अतिरिक्त भार क्यों डाला जा रहा है। कालीचरण का कहना था कि बिल में वर्णित कमेटी में स्वयंसेवी संस्थाओं, जूडिशियरी का कोई भी व्यक्ति नहीं है, "कमेटी में सरकारी अफसर हैं, लेकिन जनप्रतिनिधि नहीं है। इसमें जूडिशियरी का प्रतिनिधि भी होना चाहिए।" शराफ ने कहा कि केन्द्र गाइडलाइन दी थी कि इस तरह का सिस्टम विकसित हो कि कोई बच्चा 2 दिन गैर हाजिर रहता है तो उसकी सूचना उसके माता-पिता को दी जानी चाहिए, वह प्रावधान इस बिल से गायब है। सराफ का कहना था कि इस विधेयक को जल्दबाजी में पारित मत कीजिए, अगर ऐसा किया तो 60 हजार करोड़ का कोचिंग कारोबार राजस्थान से बाहर शिफ्ट हो जाएगा, हजारों लोग बेरोजगार हो जाएंगे।

निर्दलीय विधायकों ने भी बिल का विरोध किया। सादुलपुर के विधायक मनोज न्यांगली ने बिल की समीक्षा करते हुए कहा, बिल में यह तो बताया गया है कि कोचिंग इन्स्टीट्यूट में पढ़ा रहे अध्यापकों को, कब-कब अवकाश मिलेंगे, परनतु यह नहीं बताया गया है कि एक अध्यापक एक दिन में कितनी कक्षाएं पढ़ा सकता है और उसकी कक्षा में कितने छात्र बैठे होंगे। उन्होंने कहा कि बिल में इस विषय पर तो लिखा गया है कि एक छात्र के कोचिंग इन्स्टीट्यूट की कक्षा में कम से कम एक वर्ग मीटर की जगह होगी, परन्तु कक्षा के आकार के बारे में कुछ नहीं लिखा गया है। उन्होने कहा कि विधेयक में यह स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए कि एक कक्षा का आकार अधिक-से-अधिक कितना विशाल हो सकता है और उसमें कितने विद्यार्थी पढ़ाये जा सकते हैं।

सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि एक कक्षा में 200-300 छात्रों का बैंच नहीं हो।

- **भाजपा के वरिष्ठ विधायक कालीचरण सर्राफ ने कहा, यह कानून आया तो 60 हजार करोड़ रूपए का यह उद्योग राज्य के बाहर चला जाएगा, हजारों शिक्षक बेरोजगार हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि इससे अफरशाही हावी हो जाएगी।**
- **निर्दलीय विधायक मनोज न्यांगली ने कहा, बिल में यह नहीं बताया है कि एक कक्षा में कितने बच्चे बैठ सकते हैं।**
- **भाजपा विधायक अनिता भदेल ने कहा, प्रदेश व केन्द्र दोनों जगह भाजपा सरकार है, फिर भी केन्द्र सरकार की गाइडलाइन की उपेक्षा की गई है।**
- **नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने तंज कसा, ऐसा लगता है कि किसी 5वीं पास ने विधेयक तैयार किया है, इसमें आत्महत्याओं के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है।**

बिल का विरोध करते हुए अजमेर पूर्व से भाजपा विधायक, अनिता भदेल, ने शिक्षा मंत्री पर तंज कसते हुए कहा कि इस बार प्रदेश में और केन्द्र में दोनों जगह भाजपा सरकार है, फिर भी हमारी सरकार, केन्द्र सरकार की गाइडलाइन को अनदेखा क्यों कर रही है। केन्द्र की गाइडलाइन में स्पष्ट कहा गया है कि 16 वर्ष से कम उम्र के छात्रों को कोचिंग में नहीं डाला जाए, फिर भी इस गाइडलाइन को बिल में अनदेखा कर रखा है, यह उचित नहीं है।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि प्रदेश में दस लाख युवा आबादी घटी, लेकिन आत्महत्याएं 6654 से 13044 हो गईं, पांच साल में 87 बच्चों ने आत्महत्या की और इनमें से 60-62 अकेले कोटा में हुईं। उन्होने कहा कि प्रावधान में गरीब बच्चों के लिए कोई अधिकार नहीं है। शिक्षा मंत्री पर तंज कसते हुए जूली बोले, बिल के प्रावधान देखकर लगता है कि किसी पांचवी पास व्यक्ति ने इसे बनाया है। उन्होंने हाईकोर्ट के आदेश का वर्णन करते हुए कहा कि अदालत ने भी आत्महत्याओं को लेकर प्रसंज्ञान लिया, उसके अनुरूप कोई प्रावधान क्यों नहीं है? उन्होंने कहाकि भ्रामक विज्ञापनों पर अंकुश, 25 बच्चों पर 1 शिक्षक, सेल्फ स्टडी मोटिवेशनल प्रावधान क्यों नहीं हैं, सबको एक ही लाठी से हांका जा रहा है, बड़े और छोटे कोचिंग के अलग नियम बनें।

कांग्रेस विधायक मनोज मेघवाल ने कहा कि बिल में गरीब बच्चों की शिक्षा का कोई प्रावधान नहीं है। आरटीई कानून कोचिंग में भी लागू हो। सरकार भी कोचिंग संस्थान चला सकती है।

कोचिंग रेगुलेशन बिल पर बहस के दौरान, कांग्रेस विधायक हरीश चौधरी ने कहा कि एक डिप्टी सीएम ने एक फिल्म अवॉर्ड फंक्शन 'आईफा' के लिए 100 करोड़ दिए हैं, जबकि डिप्टी सीएम ने इतनी ही रकम प्रदेश के छात्रों और युवाओं के लिए खर्च की है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि इस नीति से प्रदेश की परीक्षा प्रणाली कैसे बेहतर बनाई जाएगी, क्या इनके अध्ययन पर केवल 100 करोड़ रुपये खर्च होना चाहिए।

निर्दलीय विधायक रविंद्र सिंह भाटी ने आत्महत्याओं को लेकर कहा, हमारे युवा आत्महत्या क्यों कर रहे हैं। भाटी ने कहा कि बिल कुछ और कह रहा है और सिचुएशन कुछ अलग है। उन्होंने कहा कि आज के समय में 12वीं के छात्र हँसना भूल चुके हैं, कोचिंगों में जो तैयारी कर रहे हैं, उन बच्चों पर इस लेवल का दबाव रहता है कि परिवार के साथ बैठ ही नहीं पाते हैं।

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, जयपुर कार्यालयः सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोनः 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोनः 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालयः आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोनः 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालयः राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोनः 2627612, फैक्सः0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्सः 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोनः 230200, 230400, फैक्सः 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्सः 01562-256908